Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> घर में धन पिण दलद्री, जिके न देवे दान।
> भार भूत धन तेहनों, कोरो करे गुमांन।।
>
> धनवान होकर भी जो दान नहीं देता, वह दरिद्र है। उसका धन भारभूत है, केवल अहंकार बढ़ाने के लिए है।
>
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 04 • 27 अक्टूबर - 02 नवम्बर, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 25-10-2025 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

पदार्थों के प्रति अनासक्त और नियम में रहें दृढ़ : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

सहिष्णुता का होता रहे उत्तरोत्तर विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 13

Address Here

हिंसा से बचने का हो प्रयत्न : आचार्यश्री महाश्रमण

आपके पास आने से हो जाती है मेरी बैटरी चार्ज : सरसंघचालक मोहन भागवत

कोबा, गांधीनगर।
15 अक्टूबर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान करते हुए कहा कि किसी की हिंसा मत करो। शास्त्रों की कल्याणी वाणी में हमें अहिंसा, संयम, तप, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और रात्रिभोजन विरमण जैसे आदर्श मिलते हैं। शास्त्रों में हिंसा का निषेध करते हुए कहा गया है – किसी का अतिपात मत करो, किसी के प्राणों का हनन मत करो। यहां तक कि साधु भी चिकित्सा के लिए किसी प्राणी की हिंसा नहीं करें।

आचार्यश्री ने कहा कि साधु के शरीर में भी रोग उत्पन्न हो सकते हैं,

परंतु उनका मूल कारण भीतर होता है। चिकित्सा विज्ञान में अनेक जांच-पद्धतियों द्वारा रोग का कारण खोजा जाता है, किंतु जैन दर्शन कर्मवाद को आधार मानता है। व्यक्ति को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। कौन-सा कर्म कब उदय में आ जाए, यह ज्ञात नहीं होता, क्योंकि मूल कारण 'कार्मण शरीर' ही है।

आचार्यश्री ने कहा कि साधु की भूमिका में अहिंसा महाव्रत है, किंतु गृहस्थों को भी अपने जीवन में यथासंभव हिंसा से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। गृहस्थ जीवन में तीन प्रकार की हिंसा बताई गई है – आरंभजा, प्रतिरोधजा और संकल्पजा।

(शेष पेज 12 पर)

मंगल प्रेरणा के उपरांत सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा मैं प्रतिवर्ष आपकी सन्निधि में आता हूँ, और यह मेरी उदारता नहीं, आपके पास आने से मेरी बैटरी चार्ज हो जाती है। हम समाज में राष्ट्र की भलाई के लिए कार्य करते हैं और राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में योगदान देते हैं। केवल राष्ट्रीय चरित्र ही नहीं, व्यक्तिगत चरित्र का निर्माण भी आवश्यक है। इन दोनों का आधार नैतिकता है और नैतिकता का आधार अध्यात्म। केवल भौतिकता में जीवन जीना सीमित हो जाता है। जब आपस में सौहार्द की भावना नहीं होती, तो हिंसा जन्म लेती है। यदि हम 'मैं सब में और सब मुझमें हैं' की भावना अपनाएँ, तो हिंसा रुक सकती है। हमें सद्भावना और नैतिकता को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

हमारे समाज की परंपराएँ पंच महाव्रतों से गहराई से जुड़ी हैं। पहले की तरह, यदि कोई मांगने वाला आए, तो उसे खाली हाथ न लौटाना और उसे मुट्ठी भर भी अनाज देना संस्कार का हिस्सा होता था। यह संस्कार बच्चों को भी दिया जाता है। सप्ताह में एक बार पूरे परिवार के साथ बैठकर श्रद्धानुसार भजन करना, घर का शुद्ध सात्विक भोजन करना, और उसके बाद देश, धर्म, संस्कृति एवं परिवार पर चर्चा करना चाहिए। इससे देश, समाज, परिवार, सभ्यता और संस्कार के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।साथ ही हमें पर्यावरण की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए—पानी बचाना, घर को हरित बनाना, और स्वदेशी उत्पादों का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए।

परम की ओर ले जाने वाले तत्वों की हो आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
18 अक्टूबर, 2025

परम की ओर ले जाने वाले वीतराग पथ के महापथिक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृतदेशना प्रदान करते हुए कहा कि जो व्यक्ति सभी प्रकार की कामासक्ति छोड़ देता है और धर्म, वैराग्य तथा साधना के प्रति समर्पित हो जाता है, वही महामुनि कहलाता है। परम के प्रति समर्पण होने पर कोई शर्त नहीं होती। कठिनाई आए तो आए, पद-प्रतिष्ठा रहे तो रहे, और न रहे तो न

रहे, परन्तु परम के प्रति समर्पण बना रहना चाहिए। आचार्यश्री ने समझाया कि कामासक्ति और विषयासक्ति छोड़ना आवश्यक है। शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श के प्रति अनासक्ति की भावना रखने वाला व्यक्ति ही महामुनि कहलाता है। संसार के सभी दुःख का मूल कारण आसक्ति है। इसलिए साधु का जीवन निर्लेप होना चाहिए और परम की प्राप्ति की ओर निरंतर गति करनी चाहिए। साधु को शास्त्रों का भी ज्ञाता होना चाहिए। बाह्य आसक्तियों से मुक्त, साधना में रस लेने वाला और शास्त्रों का ज्ञाता होने पर साधु का जीवन उत्तम बनता है।

साधु-साध्वियों और समणियों को परम के प्रति लगाव बनाए रखना चाहिए। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और साधना के माध्यम से परम प्राप्ति के साधनों में ध्यान देना आवश्यक है। साधु के मन में यह भावना होनी चाहिए कि कैसे वह परम की ओर ले जाने वाले तत्वों की आराधना कर सके।

(शेष पेज 12 पर)

आत्मा, धर्म और अध्यात्म की ओर हो आकर्षण : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
19 अक्टूबर, 2025

जीवन जीना सापेक्ष होता है। कोई भी व्यक्ति पूर्णतया निरपेक्ष होकर जीवन नहीं जी सकता। चाहे वह स्वाभाविक रूप में हो या स्वीकृत रूप में, किसी न किसी रूप में परापेक्षता जीवन में बनी रहती है।

सामूहिक जीवन में किसी के लिए यह कहना कि मैं अकेला जीवन जीऊँगा, व्यावहारिक रूप से कठिन है। कोई व्यक्ति गुफा में जाकर भी अकेले जीवन व्यतीत करे, तो शारीरिक कठिनाई में उसे दूसरों की सहायता लेनी पड़ सकती है।

प्राचीन समय में एकल विहार करने वालों को भी किसी न किसी रूप में सहयोग लेना पड़ता था। परापेक्षता के कई स्तर हो सकते हैं, और इसमें दूसरों का सहयोग लेना आवश्यक होता है। उपरोक्त पाथेय परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने प्रेक्षा विश्व भारती के वीर भिक्षु समवसरण में श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहे।

आचार्य प्रवर ने आगे फ़रमाया कि शास्त्र में संग का परित्याग करने और आसक्ति छोड़ने की शिक्षा दी गई है। व्यक्ति को अनुभव करना चाहिए कि उसका कोई नहीं है, वह अकेला है। निश्चय नय और व्यवहार नय के आधार पर व्यक्ति की दृष्टि स्पष्ट रहती है। निश्चय की दृष्टि से 'मैं अकेला हूं, मेरे कर्म मुझे भोगने हैं' सत्य है। व्यवहार नय से देखें तो व्यक्ति अकेला नहीं है। उसका परिवार, समाज, संघ और राष्ट्र उसके साथ होता है। इस प्रकार निश्चय नय और व्यवहार नय दोनों सत्य हैं। संघ की दृष्टि से भी व्यक्ति 'मैं गण का हूं और गण मेरा है' की भावना रखता है।

गृहस्थ जीवन में स्वास्थ्य और धन की अपेक्षा होती है। संसार में रहने वाले व्यक्ति को धन के साथ-साथ धर्म बनाए रखना चाहिए। धर्महीन धन का कोई मूल्य नहीं है। गृहस्थ जीवन में धनाकर्षण के साथ-साथ धर्माकर्षण भी होना आवश्यक है। व्यक्ति के जीवन में आत्मा, धर्म और अध्यात्म की ओर आकर्षण होना चाहिए।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि व्यक्ति अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना चाहता है, परन्तु बाहरी प्रकाश अशाश्वत है। वास्तविक प्रकाश भीतर का, आत्मा का प्रकाश है। इसके लिए अज्ञान को दूर करना आवश्यक है। ज्ञान प्राप्ति के लिए मन और वचन को पवित्र रखना, इन्द्रियों और मन का संयम करना आवश्यक है।

मंगल प्रवचन के उपरांत समणी मृदुप्रज्ञाजी ने गीत के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। मोटेरा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थियों ने प्रस्तुति अंग्रेजी में दी, और पूज्य गुरुदेव ने अंग्रेजी में ही मंगल प्रेरणा प्रदान की। बालक पार्थ ने भी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पदार्थों के प्रति अनासक्त और नियम में रहें दृढ़ : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
17 अक्टूबर, 2025

अखंड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के माध्यम से अमृत देशना देते हुए कहा कि शास्त्र में दो महत्वपूर्ण शब्द आए हैं – अप्रलीयमान और दृढ़। अप्रलीयमान का अर्थ है वस्त्र आदि उपकरणों के प्रति अनासक्ति, और दृढ़ का अर्थ है मजबूत। आचार्यश्री ने कहा कि साधु को उपकरणों में अनासक्त रहना चाहिए और किसी स्थान, नगर या गांव के प्रति आसक्ति या ममत्व में फंसना नहीं चाहिए। चातुर्मास की समाप्ति के बाद जहां भी साधु विहार करे, वहां से यथासंभव विचरण करना चाहिए। बहता हुआ पानी निर्मल रहता है, वहीं स्थिर पानी गंदा हो जाता है; उसी प्रकार साधु को विचरते रहना चाहिए।

विभिन्न गांवों में जाने से साधु और समाज दोनों को लाभ होता है। स्थान के लोग ऊबे नहीं और अधिक लोग उपकार प्राप्त कर सकते हैं। दूसरा लाभ यह है कि साधु को किसी एक जगह आसक्ति नहीं होती। साधु को धर्म और नियम में दृढ़ता रखनी चाहिए। धर्म के प्रति दृढ़ रहना और उपकरणों के प्रति अनासक्त रहना आवश्यक है। गृहस्थों को भी धर्म में दृढ़ता और संसार में अनासक्ति का पालन करना चाहिए। जैसे पद्म पानी में रहते हुए भी पानी से प्रभावित नहीं होता, वैसे ही गृहस्थों और श्रावकों को संसार में रहते हुए भी अनासक्त रहना चाहिए।

आचार्यश्री ने ईमानदारी और नैतिकता पर बल देते हुए कहा कि यदि चोरी करने का त्याग किया है, तो केवल कर्म से ही नहीं बल्कि मन में भी चोरी की भावना नहीं लानी चाहिए। दीपावली जैसे पर्वों पर लक्ष्मी की याचना करते समय ईमानदारी और नैतिकता का भी पालन करना चाहिए। सिद्धांतों और नियमों के पालन में दृढ़ निश्चय रखना आवश्यक है। आचार्यश्री ने सभी को प्रेरित किया कि वे अपने धर्म, अध्यात्म और अच्छे नियमों में दृढ़ भी रहें और पदार्थों के प्रति अनासक्त भी।

इस अवसर पर आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित जप अनुष्ठान का आयोजन आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में किया गया। आचार्यश्री ने आचार्य श्री भिक्षु के जप का क्रम चलाया। चतुर्विध धर्मसंघ ने भी जप में सहभागिता की। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने महिला मंडल को प्रेरणा प्रदान की। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सुमन नाहटा ने जानकारी प्रदान की। समणी कुसुमप्रज्ञाजी और समणी विपुलप्रज्ञाजी ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आधुनिकता के नाम पर हमारे मूल्य और संस्कार ना हों कमजोर

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में तेरापंथ भवन के रमणीय परिसर में 'जैन श्रावक सम्मेलन – प्रतिध्वनि सामाजिक उत्थान की' का भव्य एवं संघ-प्रभावक आयोजन विशाल जनउपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से हुआ। सभा के मंत्री राजेश बाफना ने बताया कि जैन समाज के विशिष्ट एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन की शोभा को और अधिक बढ़ा दिया। समाज के अनेक रिसोर्ट संचालक भी इस सम्मेलन में उपस्थित हुए और उन्होंने साध्वी अणिमाश्री जी के समक्ष यह संकल्प लिया कि उनके रिसोर्ट में न तो शराब का सेवन होगा और न मांसाहार की अनुमति दी जाएगी। पूरी परिषद ने 'ऊँ अर्हम' की सामूहिक ध्वनि के साथ इस संकल्प का स्वागत किया।

अपने उद्बोधन में साध्वीश्री अणिमाश्री जी ने कहा— 'हो सामाजिक उत्थान, बढ़े जिनशासन की शान'—यह केवल नारा नहीं, बल्कि जिनशासन के गौरव को ऊँचाई देने का दृढ़ संकल्प है। वर्तमान समय में जैन समाज को अपने खान-पान, रहन-सहन और जीवनशैली में संयम और संस्कारों का संतुलन बनाए रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि आधुनिकता के नाम पर हमारे मूल्य और संस्कार कमजोर न हों, इसके लिए सावधानी आवश्यक है।

साध्वीश्री ने समाज को सचेत करते हुए कहा कि एल्कोहल और हुक्का पार्टियों की प्रवृत्ति अब घरों तक पहुँचने लगी है, जो चिंताजनक है। विवाह समारोहों में भी दिखावा, आडंबर, आतिशबाजी, जमीकंद भोज और फूलों की अत्यधिक सजावट जैसी प्रवृत्तियाँ जैन संस्कारों पर आघात कर रही हैं। उन्होंने समाज से आग्रह किया कि इन विकृतियों पर गंभीर चिंतन कर ठोस निर्णय लिया जाए ताकि समाज को नई दिशा मिल सके।

मृत्युभोज की प्रथा को साध्वीश्री ने समाज की कुप्रथा बताते हुए कहा कि 'हम मृत्युभोज न करें और न ही उसमें भाग लें' — इस संकल्प को सभी ने खड़े होकर स्वीकार किया। इसी क्रम में सैकड़ों युवक-युवतियों और किशोर-कन्याओं ने शराब, हुक्का, नॉनवेज, बैचलर पार्टी और प्री-वेडिंग शूट से दूर रहने का संकल्प लिया।

साध्वी सुधाप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि हमें अपनी संस्कृति और संस्कारों को सुदृढ़ बनाए रखते हुए ऐसे कार्य करने चाहिए, जिनसे परिवार, समाज और देश में जैन धर्म की प्रतिष्ठा बढ़े।

साध्वी कर्णिकाश्री जी और साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने सामाजिक चिंतन पर प्रेरक विचार प्रस्तुत किए, वहीं साध्वी समत्वयशा जी ने मंगल संगान किया।

लालबाग रिसोर्ट के संचालक नरेश पाटोदी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि जैन समाज का यह कदम समाज सुधार की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है।कार्यक्रम में ओसवाल समाज अध्यक्ष शांतिलाल डागा, मूर्तिपूजक तपागच्छ अध्यक्ष गणपत पटवारी, स्थानक समाज मंत्री ओम बांठिया, जैन सोशल अध्यक्ष प्रकाश बालड, जैन नवयुवक मंडल अध्यक्ष पवन बाफना, सीईटीपी अध्यक्ष रूपचंद सालेचा, लघु उद्योग अध्यक्ष जसवंत गोगड़ सहित विभिन्न जैन संगठनों, संस्थाओं और क्षेत्रों के सैकड़ों प्रतिनिधि उपस्थित थे। सभाध्यक्ष महेन्द्र वेदमूथा ने सभी आगंतुकों का स्वागत-अभिनंदन किया तथा मंत्री प्रकाश वेदमूथा ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आध्यात्मिक आरोहण की सशक्त सीढ़ी है मुनि दीक्षा

गांधीनगर, बैंगलोर।

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में दीक्षार्थी हनुमानमल दूगड़ का संयम अनुमोदना तथा मंगल भावना कार्यक्रम तेरापंथ भवन, गांधीनगर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में संयम और त्याग का विशेष महत्व है। मुनि दीक्षा ग्रहण करना अर्थात् संयम की सिद्धियों के द्वार में प्रवेश करना है। यह आध्यात्मिक आरोहण की सशक्त सीढ़ी है।

जैन मुनि दीक्षा का अर्थ है पूर्ण पांच महाव्रत का जागरूकता पूर्वक आचरण करना। मुनिश्री ने आगे कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने का मतलब आत्म अनुशासन का विकास करना है।

दीक्षार्थी भाई हनुमानमल दूगड़ को मंगलकामना देते हुए मुनिश्री ने कहा कि इस उम्र में संयम की बातें करने वाले तो कई मिलते हैं, पर उस मार्ग पर चलने वाले विरले ही होते हैं। मैं आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूं कि हनुमानमल दूगड़ आज 70 वर्ष की आयु में आत्मा के उपासक बनने की तैयारी कर रहे हैं और गुरु द्वारा इंगित मार्ग का पालन करते हुए आध्यात्मिक उन्नयन करें।

मुनि आदित्य कुमार जी ने गीत के माध्यम से मंगलकामना प्रस्तुत की। मुनिश्री के मंगल महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण में दुगड़ परिवार की बहनों सीमा मालू, पूनम दुगड़, महक गिडिया और भारती डागा ने गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने दीक्षार्थी के लिए मंगलकामना व्यक्त की।

दीक्षार्थी का परिचय प्रतिक एवं प्रज्ञा मालू ने दिया। उपासकों और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम टीम की ओर से अशोक सुराणा, महेंद्र दक, विनोद कोठारी, लक्ष्मीपत मालू, राहुल डागा और टीएफ अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा ने गीतिका प्रस्तुत की।

प्रज्ञा संगीत सुधा से रोहित कोठारी, वंश दुग्गड़, तेरापंथ महासभा से प्रकाश लोढ़ा, पुष्पा गन्ना और औरंगाबाद से डॉ. अनिल नाहर ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथ सभा के मंत्री विनोद छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभी संघीय संस्थाओं की ओर से दीक्षार्थी के प्रति मंगलकामना प्रकट की। तेरापंथ सभा और अन्य संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने दीक्षार्थी भाई का साहित्य और जैन पट्ट से अभिनंदन किया।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन

कोलकाता/हावड़ा।

तेरापंथ प्रोफेशनल फ़ोरम (TPF) कोलकाता एवं हावड़ा रीजन द्वारा मेधावी छात्र सम्मान समारोह का भव्य आयोजन डिविनिटी पवेलियन में किया गया। कार्यक्रम मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इसमें कक्षा 10 एवं 12 की बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ ईस्ट ज़ोन–1 सचिव एवं साउथ हावड़ा शाखा की पूर्व अध्यक्ष खुशबू कोठारी ने किया।

शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी द्वारा मंगलाचरण से हुआ, इसके बाद कोलकाता पूर्वांचल अध्यक्ष राकेश सिंघी ने स्वागत भाषण दिया और ईस्ट ज़ोन–1 अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया ने TPF SHINE गतिविधियों की जानकारी साझा की। मुख्य अतिथि टीटी लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर संजय जैन ने विद्यार्थियों को प्रेरणादायी उद्बोधन दिया। खुशबू कोठारी ने छात्रों के लिए मनोरंजक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इसके बाद मेधावी विद्यार्थियों को मेडल, प्रमाणपत्र एवं बैग प्रदान कर सम्मानित किया गया। मुनि जिनेशकुमार जी ने अपने आशीर्वचन से सभी को प्रेरणा दी। समापन अवसर पर टीपीएफ नॉर्थ हावड़ा अध्यक्ष रितेश दुग्गर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

दीक्षार्थी अभिनंदन समारोह का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर, बेंगलुरु।

साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में मुमुक्षु हनुमानमल दूगड़ (सरदारशहर, इरोड) का मंगल भावना समारोह राजराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ।

साध्वी पुण्ययशा जी ने एक रूपक के माध्यम से समझाया कि मोह से ग्रसित व्यक्ति संसार को पार नहीं कर सकता। संसार में तीन दृष्टियाँ हैं – जड़ दृष्टि, निमित्त दृष्टि और आत्म दृष्टि। केवल आत्मदृष्टि अपनाने वाला व्यक्ति विकास के पायदान पर अग्रसर होता है।

हनुमानमल जी ने भी उपासक श्रेणी से साधना स्वीकार कर चारित्र की दिशा में कदम बढ़ाया है और गृहस्थ जीवन में त्याग एवं वैराग्य की भावना को अपनाया है।

साध्वी श्री ने आगे कहा कि प्रत्येक श्रावक-श्राविका को प्रतिदिन तीन मनोरथ की भावना अपनानी चाहिए। दीक्षार्थी हनुमानमल जी ने अपने अनुभव साझा किए कि उपासक श्रेणी से जुड़ने के बाद उनके आध्यात्मिक विकास और संयम की भावना में वृद्धि हुई। सूरत चातुर्मास में उन्होंने गुरुदेव के समक्ष दीक्षा की इच्छा प्रकट की, और कसौटी पर खरे उतरने के बाद परमपूज्य गुरुदेव ने दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की।

साध्वी वर्धमानयशा जी ने गीत के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। सभा में सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़, सरदारशहर परिषद अध्यक्ष रणजीत बोथरा, वीणा भूतोड़िया, विमल सामसुखा सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। कंचन छाजेड़ ने दीक्षार्थी के आध्यात्मिक जीवन की जानकारी दी, जबकि जम्मड़ परिवार ने गीतिका प्रस्तुत कर अपनी अभिव्यक्ति दी। तेयुप अध्यक्ष विक्रम महेर, मंत्री संदीप बैद, महिला मंडल और समस्त संस्था के पदाधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने समारोह में भाग लिया। सभा मंत्री गुलाब बाँठिया ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।
- आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
27 अक्टूबर - 02 नवम्बर, 2025

संगीत, संस्कार और सामूहिकता का अनुपम संगम

वॉयस ऑफ तेरापंथ – बैंगलोर ग्रैंड फिनाले का हुआ आयोजन

बेंगलुरु।

महामना आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा गांधीनगर, बैंगलोर द्वारा आयोजित Voice of Terapanth – Bangalore के Grand Finale का आयोजन अंबेडकर भवन में अत्यंत भव्यता के साथ संपन्न हुआ ।

मुनि डॉ. पुलकित कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की । सभी प्रतिभागियों ने भगवान महावीर की अभिवंदना में सामूहिक प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु की भजन मंडली – प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। इसके पश्चात सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया । सभा के मंत्री विनोद छाजेड़ ने कार्यक्रम की रूपरेखा समाज के समक्ष रखी ।

मंच पर उपस्थित मुनि डॉ. पुलकित कुमारजी ने अपने उद्बोधन में कहा — संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि आत्मा को पवित्र करने का माध्यम है। मुनिश्री ने इस कार्यक्रम के पीछे की सोच से सबको अवगत करवाया एवं शहर में विराजित सभी चारित्रात्माओं से प्राप्त आत्मीय सहयोग हेतु मंगलकामना व्यक्त की तथा आगामी कार्यक्रमों के लिए जनता को प्रेरित किया । मुनि आदित्य कुमार जी गीतिका का संगान किया।

कार्यक्रम में कुल 17 प्रतिभागियों ने दो आयु वर्गों में अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुतियाँ दीं — पहले चरण में 9 से 15 वर्ष के 6 प्रतिभागियों ने स्वर साधना प्रस्तुत की, जिनमें हर्षिल बरड़िया प्रथम, शशांक जैन द्वितीय एवं नियम भंडारी तृतीय स्थान पर रहे। जबकि दूसरे चरण में 16 से 50 वर्ष वर्ग के 11 प्रतिभागियों ने अपनी कला का अद्भुत प्रदर्शन किया जिनमें से नूतन बैंगानी प्रथम, सौरव बैद द्वितीय एवं हर्ष पगारिया तृतीय स्थान पर रहे। सभी प्रतिभागियों एवं विजेताओं का सम्मान सभा एवं गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के प्रायोजकों का सभा द्वारा सम्मान किया गया। निर्णायक मंडल में मीठालाल पावेचा, पुष्पा राठौड़, एवं जनता जनार्दन (पब्लिक वोटिंग) शामिल रहे। वोटिंग प्रक्रिया QR कोड आधारित डिजिटल प्रणाली से सम्पन्न हुई, जो पारदर्शिता और तकनीकी नवाचार का उदाहरण बनी।

प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान करने वाली हेमलता पिपाड़ा का सम्मान किया गया। इवेंट के निर्णायक एवं प्रशिक्षकों का अभिनंदन अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद जी छाजेड़, और अन्य पदाधिकारियों द्वारा किया गया। पूरे कार्यक्रम में Mrs AI के माध्यम से डिजिटल संचालन ने कार्यक्रम को तकनीकी और कलात्मक रूप से उत्कृष्ट बनाया।

पुरस्कार वितरण के बाद प्रभारी नवनीत मुथा ने सभी सहयोगियों, निर्णायकों, प्रतिभागियों और उपस्थित जनसमुदाय का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन लक्की ड्रॉ और सम्मान समारोह के साथ हुआ।

संचालन की कमान संयोजक रोहित कोठारी ने संभाली, जिनका साथ डिजिटल को-होस्ट Mrs AI ने दिया। कार्यक्रम के सफल संयोजन में सह संयोजक गगन बरड़िया एवं सह संयोजक दीक्षित सोलंकी का अथक श्रम लगा। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में रजत बैद, दिनेश छाजेड़, सुरेश कोठारी, संजय गोठी, आलोक कुंडलिया,हिमांशु चंडालिया, विकास बाबेल आदि का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ ।

कार्यक्रम में महासभा से प्रकाश लोढ़ा, तेरापंथ सभा यशवंतपुर के अध्यक्ष सुरेश बरडिया, राजाजीनगर के अध्यक्ष अशोक चौधरी, हनुमंत नगर सभा के अध्यक्ष गौतम दक, सभा के पूर्व अध्यक्ष बहादुर सेठिया, कन्हैयालाल गिरिया, सुरेश दक, कमल दुगड़, ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष गौतम मुथा, प्रकाश बाबेल, क्षेत्रीय संयोजक, पूर्व निर्णायक आदि उपस्थित थे। जेटीएन से रवि सामरा एवं महावीर मेहता का सहयोग रहा ।

संक्षिप्त खबर

स्पिरिचुअल स्टॉक इन्वेस्टमेंट प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर। साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर द्वारा रोचक प्रतियोगिता स्पिरिचुअल स्टॉक इन्वेस्टमेंट का तेरापंथ भवन विजयनगर में आयोजन किया गया। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि नई पीढ़ी को जैन धर्म की परंपरा एवं तेरापंथ धर्म संघ के इतिहास को समझने का सरल एवं सुगम मार्ग है प्रतियोगिता। टी के एम एवं टी वाई पी ने नये तरीके से अच्छा कम्पटीशन करवाया है ऐसे ही सभी प्रतिभागी उत्साह एवं उमंग के साथ आगे बढ़ते रहे। इस प्रतियोगिता में कुल 11 टीमों ने हिस्सा लिया, जिनको पूर्व प्रेषित प्रश्नोत्तर के आधार पर विभिन्न राउंड मे प्रश्न पूछे गये जिसका कांसेप्ट शेयर मार्केट से जुडा हुआ था। प्रथम टीम अहिंसा इक्विटिस, द्वितीय टीम प्रेक्षा वेंचर, तृतीय टीम मर्यादा कैपिटल सहित सभी टीमों को प्रायोजक मनोहरलाल, राकेश, मुकेश बाबेल परिवार द्वारा परितोषित दिया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में साध्वी रौनकप्रभा जी का मार्गदर्शन रहा। संयोजक एवं होस्ट प्रिंस मांडोत, टी के एम संयोजक दर्शन बाबेल, सहसंयोजक रिदम चावत, हर्ष मांडोत सहित रौनक गाँधी का विशेष श्रम रहा।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा 2025 आयोजित

हैदराबाद। महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा निर्देशित ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा पूरे देश में आयोजित की गई। इसी क्रम में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में हैदराबाद में डी. वी. कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में यह परीक्षाएं संपन्न हुई। यहां विराजित साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी से मंगल पाठ श्रवण के पश्चात परीक्षाओं का प्रारंभ हुआ। राजेन्द्र बोथरा द्वारा जारी विज्ञप्ति अनुसार सभा के निवर्तमान अध्यक्ष बाबूलाल बैद, आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी, क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा, परामर्शक अंजू बैद, मुख्य प्रशिक्षक पुष्पा बरड़िया, केंद्र परीक्षा व्यवस्थापक सरिता नखत व तेमम प्रतिनिधि उपाध्यक्ष प्रभा दूगड़ की साक्षी में प्रश्न पत्र खोले गए। विज्ञ के लिए 5 व विशारद के लिए 3 प्रशिक्षिकाओं ने निर्धारित समय में परीक्षा लिखी।

'हिट युवा फिट युवा– संडे ऑन साइकिल' अभियान

श्रीडूंगरगढ़।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् निर्देशित तेयुप श्रीडूंगरगढ़ द्वारा 'Hit Yuva Fit Yuva – Sunday on Cycle' कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। साइक्लोथॉन का मुख्य संदेश रहा – 'नशा मुक्त हो देश'।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी संगीतश्रीजी के मंगल पाठ से हुआ एवं रैली मुख्य बाजार से होते हुए मालू भवन पहुंची। संयोजक रौनक पारख ने बताया इस मौके पर युवाओं ने एक साथ मिलकर समाज में फिटनेस, स्वास्थ्य और नशा मुक्ति का संदेश दिया। साइकिल पर निकले युवाओं का उत्साह और ऊर्जा आकर्षण का केंद्र रही। सह संयोजक गौरव बोथरा ने बताया इस आयोजन में यह संदेश प्रमुख रहा कि – 'स्वस्थ जीवन शैली ही सशक्त राष्ट्र की पहचान है'। युवाओं ने आह्वान किया कि नई पीढ़ी नशा छोड़कर खेलकूद और व्यायाम को अपनाए, ताकि देश सशक्त और समृद्ध बन सके। मालू भवन में डॉ साध्वी परमप्रभाजी ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया एवं साध्वी संगीतश्रीजी ने सभी प्रतिभागियों को मंगल प्रेरणा दी। कार्यकम का समापन मंगल पाठ से हुआ। इस आयोजन के प्रायोजक विनोद कुमार अरिहंत बाफना रहे। अध्यक्ष विक्रम मालू ने इस सफल आयोजन के लिए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में भाजपा युवा नेता सुनील तावणीया, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष सत्यनारायण स्वामी, MBDD संयोजक ईश्वर चौरड़िया, सभा मंत्री प्रदीप पुगलिया, तेरापंथ युवक परिषद्, किशोर मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत समिति आदि समाज के लोगों की सक्रियता रही।

आडंबर मुक्त तपस्या ही तपस्या है

गंगाशहर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ति उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में तप अभिनंदन समारोह का आयोजन रखा गया। इस अवसर पर मुनि कमलकुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि विनय-सारिका चौपड़ा का जीवन साधनामय है। दोनों का नियमित प्रवचन सामायिक का क्रम देखकर मन प्रसन्न होता है। मासखमण करना कठिन है परंतु नियमित सामायिक प्रवचन में होना बड़ी बात है। विनय सरल सहिष्णु और विनम्र है इसी प्रकार सारिका भी इन गुणों से सम्पन्न होने के कारण ही अपनी माता की सेवा के साथ बच्चों में अच्छे संस्कार देखने मिलते हैं।

विनय का मासखमण सबके लिए प्रेरणा है, आडम्बर मुक्त, साधना युक्त तपस्या ही वास्तव में तपस्या होती है। संयोग से प्रियंका रांका ने भी तपस्या प्रारंभ कर रखी है आज तीनों के 27 की तपस्या है।

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा जी के संदेश का वाचन जैन लूणकरण छाजेड़ ने किया। परिवार की बहन बेटियों ने सामूहिक गीतिका संगान किया। महेन्द्र सोनावत ने परिवार की तरफ से कृतज्ञता ज्ञापित की। विनय चौपड़ा ने कृतज्ञता ज्ञापित की। मुनिश्री ने स्वरचित गीतिका का संगान किया। तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद के सदस्यों ने तपस्वियों का स्वागत पताका व साहित्य से किया। इस अवसर पर तीनों तपस्वियों ने 27 के प्रत्याख्यान किये।

संक्षिप्त खबर

संडे ऑन साइकिलिंग कार्यक्रम का आयोजन

फरीदाबाद। तेरापंथ युवक परिषद, फरीदाबाद द्वारा ' Pedal for a Purpose – Sunday on Cycle' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस साइकिल राइड का उद्देश्य समाज में रक्तदान जागरूकता फैलाना और नशा मुक्त युवा अभियान को प्रोत्साहित करना रहा।

राइड का प्रारंभ तेरापंथ भवन से हुआ और यह अणुव्रत मार्ग होते हुए टाउन पार्क पर संपन्न हुई। इस अवसर पर योग ग्रुप, रनिंग ग्रुप, विभिन्न सोशल ग्रुप्स और सामान्य नागरिकों को भी साथ जोड़ा गया।

किशोर मंडल के साथियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा टाउन पार्क में उपस्थित युवाओं और किशोरों को विशेष प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम के दौरान अणुव्रत समिति ने भी नशा मुक्ति के प्रेरक संदेश प्रस्तुत किए। इस अवसर पर टीपीएफ, अणुव्रत समिति के सदस्यों ने भी हिस्सा लिया।

जैन विद्या परीक्षा का आयोजन

हैदराबाद। समण संस्कृति संकाय लाडनूं द्वारा संचालित एवं तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के तत्वावधान में जैन विद्या परीक्षा हैदराबाद केन्द्र में तेरापंथ भवन डी.वी. कॉलोनी सिकंदराबाद में केंद्र व्यवस्थापिका हेमा मालू की देखरेख में भाग 5 से 7 ऑनलाइन व भाग 8 एवं 9 का ऑफलाइन सफल आयोजन सम्पन्न हुआ। साध्वी डॉक्टर गवेषणाश्री जी आदि ठाणा ने नमस्कार महामंत्र पाठ का श्रवण कराया और सभी परीक्षार्थीगण को प्रामाणिकता के साथ परीक्षा देने प्रेरणा दी। उपस्थित संस्थाओं के पदाधिकारीयों के समक्ष परीक्षा प्रारम्भ होने के 15 मिनट पूर्व प्रश्न पत्र का लिफाफा खोला गया।

परीक्षा से पूर्व रीटा सुराणा ने परीक्षार्थियों को कायोत्सर्ग कराया और सभी परीक्षार्थीयों को शांत मन से परीक्षा देने की प्रेरणा दी। केन्द्र व्यवस्थापिका हेमा मालू, तेलंगाना आंध्र प्रदेश के जैन विद्या प्रभारी एवं निरीक्षक पदमचंद दुगड़, तेलंगाना की आंचलिक संयोजिका संगीता गोलछा एवं केंद्र द्वारा नियुक्त सभी निरीक्षकों ने परीक्षा में निरीक्षण किया। कुल 60 परीक्षार्थी परीक्षा में संभागी बने।

विशाल रैली का आयोजन

सैंथिया। तेरापंथ युवक परिषद, सैंथिया एवं स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAI) के संयुक्त तत्वावधान में बोलपुर में एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली का मुख्य उद्देश्य युवाओं को दो महत्वपूर्ण अभियानों — नशा मुक्ति और मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव (MBDD) — के प्रति जागरूक करना था। रैली का प्राथमिक लक्ष्य युवाओं को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करना था, ताकि वे एक स्वस्थ, संयमित और सफल जीवन जी सकें।

रैली के माध्यम से विशाल रक्तदान अभियान के प्रति भी जागरूकता फैलाई गई। इसका उद्देश्य लोगों को रक्तदान के महत्व से अवगत कराना और उन्हें इस कार्य में भाग लेने के लिए प्रेरित करना था, ताकि जरूरतमंदों का जीवन बचाया जा सके। रैली में बड़ी संख्या में युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और समाज को नशा-मुक्त एवं स्वस्थ बनाने का संकल्प लिया।

तप समाचार

गंगाशहर। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में जेठमल छाजेड़, दीपंकर छाजेड़ ने 8 की तपस्या व हनुमानमल छाजेड़ ने 15 दिन की तपस्या पूर्ण की।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा। राजलदेसर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी चंपालाल - सुमन बैद के सुपौत्र एवं गगनदीप - ऋतु बैद के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन कुमार बैंगाणी एवं बीरेंद्र बोहरा ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

गुरु दर्शन कर लौटा त्रिदिवसीय गुरु कृतज्ञता यात्रा संघ

राजराजेश्वरी नगर, बेंगलुरु।

साध्वी पुण्ययशा जी की प्रेरणा से श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, राजराजेश्वरी नगर के तत्वावधान में त्रिदिवसीय 'गुरु कृतज्ञता यात्रा संघ–2025' का आयोजन हुआ। यह यात्रा युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के दर्शनार्थ अहमदाबाद पहुँची। सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़, मंत्री गुलाब बाँठिया, पदाधिकारीगण एवं अन्य सभा-संस्थाओं के लगभग 130 सदस्य गुरु चरणों में उपस्थित हुए।

सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में क्षेत्र में चल रही गतिविधियों, जप–तप एवं आगामी चातुर्मास हेतु निवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने साध्वी विनीतयशा जी और साध्वी बोधिप्रभा जी की तपस्या की जानकारी भी दी। मंत्री गुलाब बाँठिया ने संवत्सरी संबंधी सामूहिक खमतखामणा करवाया।

आचार्य प्रवर ने राजराजेश्वरी नगर सभा की सक्रियता की सराहना करते हुए ज्ञानशाला के संवर्धन पर विशेष बल दिया, इसे बाल-संस्कारों का सशक्त माध्यम बताया। साथ ही मुमुक्षु निर्माण की भावना को प्रोत्साहित किया और भिक्षु त्रिशताब्दी जन्म वर्ष को 'भिक्षु चेतना वर्ष' के रूप में सार्थक रूप से मनाने का आह्वान किया। उन्होंने तेरापंथ प्रबोध और भिक्षु विचार दर्शन के स्वाध्याय द्वारा आत्मशुद्धि का संदेश दिया तथा सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

मुख्यमुनि श्री महावीरकुमार जी ने सभा के कार्यों की प्रशंसा की और साधना शिविर में सहभागिता हेतु प्रेरित किया।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने साध्वी पुण्ययशा जी के श्रम की सराहना करते हुए मुमुक्षु निर्माण में प्रयास बढ़ाने की प्रेरणा दी। साध्वी संबुद्धयशा जी ने चातुर्मास से संबंधित जानकारी प्राप्त की और सभी को साधना में अग्रसर रहने का संदेश दिया।

इस यात्रा के मुख्य प्रायोजक नोहर (भादरा) निवासी एवं बेंगलुरु प्रवासी सारिका–सुनिल–ऋतिक नाहटा परिवार रहे। सभाध्यक्ष ने उनके सहयोग की सराहना करते हुए मंगलकामनाएँ दीं। यात्रियों ने शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर, अक्षरधाम आदि तीर्थ क्षेत्रों का भ्रमण किया।

संघ में पूर्व अध्यक्ष कमलसिंह दुगड़, मनोज डागा, छतरसिंह सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु बोथरा, तेयुप एवं तेममं के सदस्य सम्मिलित रहे। संयोजक राजेश छाजेड़ एवं सह–संयोजक सरोज आर. बैद, दिनेश मरोठी, सुशील भंसाली, बिकास छाजेड़ आदि ने यात्रा को सफलतापूर्वक संचालित किया।

आत्मा, शरीर, मन और बुध्दि को मंगल बनाता है तप

हैदराबाद।

डॉ. साध्वी गवेषणाश्री ने कहा- तप मंगल है, तप टॉनिक है, तप शक्ति है। तप आत्मा, शरीर, मन और बुध्दि चारों को मंगल बनाता है।

भगवान महावीर से प्रश्न पूछा गया- तवेणं भंते जीवे किं जणयइ? भंते! तप से जीव क्या प्राप्त करता है? भगवान ने कहा- तवेणं वोदाणं जणयइ। तप से वह व्यवदान को प्राप्त करता है। जैन धर्म में निर्जरा का महत्वपूर्ण स्थान है। तप के द्वारा कर्मों की विशेष निर्जरा होती है। पूर्वार्जित कर्म संचय को क्षीण करने का अच्छा साधन है- तप।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा- इन्द्रिय संयम के लिए खाने का संयम आवश्यक है। तपस्या जीवन का धन है। आहार का संयम न होने पर इन्द्रियां अनियंत्रित हो जाती है, उच्छृंखल हो जाती है।

आयुर्वेद में तो कहा है- यदि स्वस्थ रहना है तो हर सप्ताह में एक लंघन अवश्य करें। समदड़िया परिवार की पुत्रवधू सीमा ने मासखमण करके साहस का काम किया है। साध्वी दक्षप्रभा जी ने तपस्वी की अनुमोदना अपने सुमधुर स्वरों से की। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष नमिता सिंघी, मंत्री निशा सेठिया, सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने मासखमण के उपलक्ष्य में अपने भाव में व्यक्त किये।

सभा सहमंत्री हुक्मीचंद कोटेचा ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन किया। सभा परामर्शक लक्ष्मीपत बैद ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। साध्वी मेरुप्रभा जी ने कुशलता पूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
27 अक्टूबर - 02 नवम्बर, 2025

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के जन्मोत्सव पर भावांजलि

पुरुषार्थ के पर्याय – आचार्य श्री तुलसी

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

भारतीय परंपरा में अनेक ऋषि, महर्षि, संत, महंत और आचार्य हुए हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान, तपस्या और भक्ति के द्वारा जनमानस को प्रभावित और प्रकाशित किया है। जीवन के अनेक क्षेत्रों में पदन्यास करते हुए विकास के नित्य नवीन द्वारों को उद्‌घाटित किया है। जैन, बौद्ध, सिख, सनातन – सभी परंपराओं के संतों ने जनजीवन में अध्यात्म के बीजारोपण कर संस्कारों को पल्लवित और पुष्पित किया है। इसी भूमि को धर्म और अध्यात्म का गौरव सदा से प्राप्त हो रहा है।

इसी भूमि पर जैन परंपरा के इतिहास में अनेक उद्भट आचार्य हुए हैं, जिन्होंने समय-समय पर अपने पराक्रम और पुरुषार्थ के द्वारा जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया है तथा मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना में महनीय भूमिका निभाई है। इसी श्रृंखला में बीसवीं शताब्दी के प्रथमार्ध में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम पट्टधर हुए हैं आचार्य श्री तुलसी।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य श्री तुलसी एक संप्रदाय के आचार्य अवश्य थे, किन्तु उनकी कार्यशैली संप्रदायातीत थी। इसीलिए उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक – सभी क्षेत्रों में अपने वर्चस्वी जीवन व क्रांतिकारी विचारों से जागृति के नवीन प्रयोग किए। धार्मिक क्षेत्र में अपने संघीय गतिविधियों में परिवर्तन की लहर पैदा की।

आचार्य पद पर आसीन होने के बाद शिक्षा, दीक्षा व विहार यात्रा में परिवर्तन किए। उस समय का साध्वी समाज शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पिछड़ा हुआ था। संस्कृत अथवा अंग्रेजी की बात तो बहुत दूर, हिंदी का भी पूरा ज्ञान नहीं था। साध्वियों द्वारा हिंदी में व्याख्यान देना भी बहुत मुश्किल था। आचार्य तुलसी के पुरुषार्थ से वे ही साध्वियां हिंदी, संस्कृत व अंग्रेजी में धाराप्रवाह बोलने में सक्षम होती गईं। उन्होंने साध्वियों की दीक्षा से पूर्व पारमार्थिक शिक्षण संस्थान का सूत्रपात किया, जिससे उस संस्था में रहकर वे अच्छे ढंग से अध्ययन कर सकें।

आज तेरापंथ धर्मसंघ का समणी वर्ग व साध्वी समाज सुदूर देशों की यात्राएं व श्रावक समाज की सार-संभाल तो बखूबी करते ही हैं, साथ ही अन्य सामाजिक व राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्रतिबोध देकर उनका सही अर्थ में मार्गदर्शन भी करते हैं। न केवल साध्वी समाज, अपितु अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल से संबंध होकर समाज की महिलाएं भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। अनेक स्थानों पर इनके शाखा-मंडलों द्वारा नए-नए कार्यों और गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा है। घूंघट के पर्दे व चारदीवारी में कैद महिला समाज को अपनी अस्मिता की पहचान करवाकर शक्ति का अहसास कराने में आचार्य श्री तुलसी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सामाजिक क्षेत्र में पलने वाली अनेक कुरीतियों को दूर करने के लिए 'नया मोड़' का सर्जन किया। यद्यपि रूढ़िमुक्त समाज बनाने के लिए उन्होंने अनेक कड़वे घूंट भी पिए, क्योंकि जिस समाज में रूढ़ियां अथवा अंधविश्वास पलते हैं, वह समाज पिछड़कर सौ वर्ष पीछे चला जाता है। इसके लिए विरोधों के अनेक बवंडर झेलकर भी वे सदा आगे बढ़ते रहे हैं।

भगवान महावीर का परम सूत्र 'एगा माणुसी जाई' – मनुष्य जाति एक है। जातिवाद, प्रांतवाद, भाषावाद, वर्णवाद के आधार पर मानव-मानव के बीच खाई उन्हें कतई पसंद नहीं थी। आचार्य तुलसी ने इसे प्रयोगात्मक तौर पर सामाजिक स्तर पर नीची कहलाने वाली कौम को अपने प्रवचन स्थल पर अग्रिम स्थान देकर साकार किया। यद्यपि इसका समाज ने व्यापक स्तर पर विरोध मुखरित किया, किन्तु उन्होंने कभी विरोध का जवाब विरोध से नहीं दिया। उन्होंने विरोध को भी विनोद के लहजे में उत्तर दिया।

उनकी अपनी मान्यता थी – 'जो हमारा करे विरोध, हम उसे मानें विनोद।' एक बार कुछ मतावलंबियों ने उनके विरोध स्वरूप सड़कों पर पोस्टर चिपका दिए। आचार्य तुलसी ने कहा – 'ये तो हमारे हितैषी हैं, क्योंकि इन पोस्टरों के चिपकाने से हमारे पैर काले नहीं होंगे।' इस तरह विरोध को टालकर शांति का परिचय दिया। विरोध को शांति से सहन करने वाला ही आगे बढ़ता है, विकास करता है।

अणुव्रत आंदोलन के सूत्रपात से पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ एक संप्रदाय के घेरे में बंधा हुआ था, किन्तु देश की आजादी के साथ आचार्य तुलसी के मस्तिष्क में एक क्रांति का जन्म हुआ और वह क्रांति थी नैतिक क्रांति। देश में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना व चारित्रिक उन्नयन के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया।

यद्यपि देश में अनेक प्रकार के आंदोलन समय-समय पर होते रहे, लेकिन नैतिक आंदोलन के रूप में पहली बार सामने आया अणुव्रत आंदोलन। वर्ण, जाति, संप्रदाय से मुक्त यह आंदोलन 'सर्वजन हिताय – सर्वजन सुखाय' की भावना से ओत-प्रोत है। इसके लिए स्वयं आचार्य तुलसी अपनी पदयात्रा में सर्वप्रथम दिल्ली पधारे और वहां देश के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेंद्र प्रसाद से संपर्क हुआ।

राजेंद्र बाबू के संपर्क व सहयोग से प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से भी मुलाकात हुई। चरित्र-निष्ठ, नैतिक-निष्ठ परिकल्पना की वार्ता से पंडित जवाहरलाल नेहरू भी बहुत प्रभावित हुए। यद्यपि पंडित जी के मन में धर्म व धर्मगुरुओं के प्रति विशेष आकर्षण कभी नहीं रहा, किन्तु इस नैतिकता व चरित्र की बात का उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा तथा उस आंदोलन के प्रचार-प्रसार में अपनी रुचि व समर्थन प्रकट किया।

आचार्य तुलसी के शब्दों में अणुव्रत है – 'अणुव्रत की आचार संहिता प्रवर कल्पना का परिणाम, स्फुरित हुआ धार्मिक चिंतन में, नैतिकता क्यों बनी विराम।

नैतिकता से शून्य धर्म का कैसे कितना होगा मूल्य, मानव कैसे होगा मानव, मानवता सर्वोच्च अमूल्य।'

इस अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से स्वयं आचार्य तुलसी और उनके सैकड़ों जीवनदायी कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रव्यापी स्तर पर इसका प्रचार-प्रसार किया। झुग्गी-झोंपड़ी हो अथवा राष्ट्रपति भवन – व्यक्ति-व्यक्ति में नैतिक मूल्यों व चरित्रनिष्ठा की भावना जागी। क्योंकि व्यक्ति से समाज और राष्ट्र सुधार संभव है। व्यक्ति एक इकाई है, उसके सुधार की परिकल्पना से राष्ट्र का सुधार संभव है।

अणुव्रत रूपी पक्षी के दो पंख स्वरूप प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का अवदान प्राप्त हुआ, जिससे व्यक्ति तनावमुक्त व स्वस्थ जीवन जी सके। जीवन विज्ञान वर्तमान बालपीढ़ी को सुसंस्कारी व स्वस्थता प्रदान करता है। शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य ही स्वस्थ जीवन के लक्षण हैं। जब तक सर्वांगीण विकास नहीं होता, तब तक विकास की अवधारणा अधूरी रहती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को सर्वांगीण विकास का लक्ष्य बनाना चाहिए।

आचार्य तुलसी समयज्ञ, आगमज्ञ, तत्वज्ञ व सर्वकला-विशेषज्ञ पुरुष थे। समाज और राष्ट्र की दिशा और दशा के बदलाव में उन्होंने अपना पराक्रम और पुरुषार्थ नियोजित किया। समय की नब्ज पर सदैव अपना हाथ बनाए रखा। बाल, युवा, महिला वर्ग के साथ मजदूर, व्यापारी, राज्यकर्मचारी, राजनेता – अर्थात समग्र मानव जाति के हितार्थ अपना संदेश दिया। मानव जाति के हितार्थ व कृतार्थ करने के उद्देश्य से उन्होंने पुरुषार्थ किया एवं उनमें सफलताएं अर्जित कीं।

ऐसे महापुरुष शताब्दी अथवा सहस्राब्दी में कभी-कभी ही हुआ करते हैं, जिनके अवदानों से समग्र मानव जाति कृतकृत्य हो जाती है और उन्हें स्मरण कर आत्मानंद की अनुभूति करती है। उनके इस शताब्दी वर्ष पर हम धन्यता का अनुभव करें तथा उनके संयम जीवन की ज्ञानरश्मियों से स्वयं को निष्णात करें – यही उनके प्रति सच्ची भावांजलि।

'जिन्हें जरूरत हो वह करें खुदाओं की तलाश,
हम तो तुलसी को दुनिया का खुदा कहते हैं।'

जन-जन की आस्था के आधार थे आचार्य श्री तुलसी

● मुनि कमल कुमार ●

आचार्य श्री तुलसी बचपन से ही श्रमशील और अध्ययनप्रिय थे। मात्र 11 वर्ष की अवस्था में उन्होंने दीक्षा ग्रहण की और केवल 16 वर्ष की आयु में एक कुशल अध्यापक बन गए। उनके पास अध्ययन करने वालों के लिए अनुशासन सर्वोपरि था। स्वयं किशोर अवस्था में होते हुए भी उनका परिश्रम इतना प्रभावी था कि उनके सभी शिष्य प्रकांड विद्वान बन गए।

पूज्य कालूगणी के हृदय में आपके प्रति विशेष स्थान था, और मात्र 22 वर्ष की अवस्था में उन्होंने आपको उत्तराधिकारी घोषित किया। मुनि तुलसी आचार्य तुलसी बन गए। आपके दूरदर्शी चिंतन और युगानुकूल आयामों के कारण आज तेरापंथ जन-जन का पंथ बन गया।

आपके द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान जैसे आयाम हर जाति, संप्रदाय और वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हुए। देश के अनेक प्रमुख धार्मिक, राजनीतिक, औद्योगिक और बौद्धिक व्यक्तित्वों का आपसे गहरा संपर्क रहा।

आपने लंबी-लंबी पदयात्राएँ कर लोगों को जीवन जीने की कला सिखाई, उन्हें व्यसनमुक्त बनाया और व्यक्ति, परिवार तथा समाज को सशक्त किया। बाल विवाह, मृत्युभोज और घूंघट प्रथा के उन्मूलन में आपके प्रयासों से न केवल तेरापंथ समाज, बल्कि अन्य समाजों में भी व्यापक प्रभाव पड़ा। महिला शिक्षा के क्षेत्र में जो प्रगति हुई, वह आपके उपदेशों का ही प्रतिफल है।

जैन समाज की एकता के लिए आपने अथक प्रयास किए, जिसके परिणामस्वरूप आज अनेक कार्यक्रमों में सभी संप्रदायों की समान उपस्थिति देखने को मिलती है। इससे जैन समाज का वर्चस्व अनेक स्तरों पर बढ़ा है।

आचार्य श्री तुलसी एक संप्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी असंप्रदायिक विचारधारा के धनी थे।

इसी कारण वे जन-जन की आस्था के आधार बने। वे युग की नब्ज को भली-भांति जानते थे, इसलिए युगप्रधान आचार्य कहलाए।

आज के इस पद-लिप्सु संसार में उन्होंने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर संपूर्ण समाज को त्याग और बोध का अद्वितीय पाठ दिया।

आपके 112वें जन्मदिवस पर शत-शत नमन करते हुए यही मंगलकामना करते हैं कि अज्ञात लोक से भी आप हमें साधना के पथ पर प्रेरणा और मार्गदर्शन प्रदान करते रहें।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
27 अक्टूबर - 02 नवम्बर, 2025

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के जन्मोत्सव पर भावांजलि

मानवता के मसीहा आचार्य श्री तुलसी

● साध्वी डॉ. सरलयशा ●

उत्सव के मानिंद जीवन के हर पल को उमंग और आनंद से जीने वाले मानवता के मसीहा थे आचार्य श्री तुलसी। उनका जीवन चरित्र आदर्श का उपनय बना। दीपावली की खुशियों को गुणित करने वाला त्योहार भैयादूज के दिन लाडनूं (राज.) के खटेड़ कुल में उनका जन्म हुआ। विकास की असीम संभावनाओं को अपने भीतर समेटकर पलने वाला बालक सबका चेहता बना। 'शुभस्य शीघ्र' की सूक्ति चरितार्थ की। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पायु में वीतराग पथ पर आगे बढ़ने का दृढ़ निश्चय कर मुनिजीवन अंगीकार किया। जीवन के आसियाने पर ताउम्र अनगिन कीर्तिमान गढ़े। प्रस्तुत है एक संक्षिप्त झलक –

गुरु के विश्वासपात्र

संयमजीवन में सर्वात्मना समर्पित होकर लक्ष्यभेदी साधना में जुट गए। विनम्रता, जागरूकता और सतत् अप्रमतता से मुनि तुलसी ने वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, अनुभववृद्ध संत मंडली के दिलों में स्थान बनाया। गुरु दृष्टि की अखंड आराधना करते हुए विकास पथ पर बढ़े। संन्यास के प्रथम दशक में स्वात्म-अर्हताओं को पुष्कल संयम साधना से प्रदीप्त किया। प्रबल पुण्योदय और प्रखर पुरुषार्थ से गुरु के विश्वस्त प्रिय शिष्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए। मात्र बाईस वर्ष की उम्र में तेरापंथ धर्मसंघ की यशस्वी परंपरा के आचार्य पद पर काबिज बने।

अद्भुत उड़ान

नेतृत्व की राहों पर गुरु के विश्वास को साबित किया। कुशल शिल्पकार की नाईं धर्मसंघ के एक-एक अंतरंग सदस्य में छिपी विराट संभावनाओं को झनझनाया। धर्मसंघ में विकास की नूतन रेखाएं खींचीं। अपने कालजयी कर्तृत्व से समाज, संघ और राष्ट्र को नया विजन दिया। वीतरागवाणी को आधुनिक संदर्भ में संपादन के महनीय कार्य को अंजाम दिया। भगवान महावीर के शाश्वत सिद्धांतों को सुगम शैली में प्रस्तुत कर समण श्रेणी के जरिए विश्वव्यापी बनाने की पहल की।

जागृति का सिंहनाद

हर वर्ग को अपनी पारदर्शी सोच से शुभ भविष्य की राह दिखाई। जन-जीवन में व्याप्त अंध-रूढ़ियों को अलविदा करने हेतु महाराणा प्रताप की वीरभूमि से नया मोड़ अभियान चलाया। नारी जाति के उद्धारक कहलाए। महिलावर्ग को अपनी अर्हताओं को उजागर करने के लिए मंच दिया। विकास की दिशा में गतिमान अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल उनके सत्प्रयासों की मिसाल है।

युवा शक्ति समाज की रीढ़ है। इस वर्ग को उपेक्षित करना बड़ी भूल होगी। आचार्य तुलसी भविष्यद्रष्टा थे। उन्होंने युवकों को संगठन की एक पंक्ति में खड़ा किया। वर्तमान में तेयुप सेवा-संस्कार संगठन जैसे कार्यों को संपादित कर अपूर्व उड़ान भर रहा है।

नैतिक उत्थान में योगदान

किसी भी राष्ट्र के उत्थान में केवल भौतिक विकास ही पर्याप्त नहीं होता, नैतिक उत्थान की भी अहम भूमिका रहती है। भारत की आजादी के साथ आचार्य तुलसी ने ऋषि परंपरा के दायित्व का निर्वहन करते हुए 'असली आजादी अपनाओ' का सिंहनाद किया। भारतीय संस्कृति के अनुरूप छोटे-छोटे नियमों का पैकेज दिया, जो 'अणुव्रत आंदोलन' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इससे नैतिकता, ईमानदारी, प्रामाणिकता, सद्भावना और भाईचारे की चेतना को बढ़ावा मिला। वर्तमान के माहौल में उच्छृंखल वृत्तियों पर नियंत्रण पाने में यह आंदोलन अंकुश की भूमिका अदा करता है।

यह लाइफ इंश्योरेंस की तरह जीवन को सुरक्षित बनाता है और मन को खुशहाली का सुकून देता है। इसकी गूंज खेत-खलिहानों में, गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पहुंची। लाखों लोगों ने अणुव्रत के नियमों को अपनाकर अपने जीवन की दिशा और दशा बदली है। पचहत्तर वर्ष पूरे होने पर भी यह आंदोलन प्रभावी है, जो इसकी उपयोगिता का साक्षी है।

फौलादी साहस

मानव उत्थान हेतु आचार्य तुलसी ने अनगिन अवदान दिए। शिक्षा के क्षेत्र में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का उद्भव उन्हीं के सत्प्रयासों की देन है। हर कार्य को करीने से संपादित करने की अनूठी महारत उनमें प्राणवान थी।

कार्यों को अंजाम देते समय यदा-कदा उनका घोर विरोध भी हुआ। मनचले लोगों ने उन्हें काले झंडे दिखाए, यहां तक कि उनके पुतले जलाए गए। पर उनका फौलादी मनोबल कभी मायूस नहीं हुआ। कड़ी से कड़ी कसौटी को भी उन्होंने समभाव से झेला। उनका स्लोगन था – 'जो हमारा हो विरोध, हम उसको समझें विनोद।' उनके बाबत निम्न पंक्तियां सटीक ठहरती हैं –

'नसीब जिनके ऊंचे और मस्त होते हैं,
इम्तिहान भी उनके जबरदस्त होते हैं।'

अस्तु, आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन में अनगिन कीर्तिमान गढ़े। उसकी झलक इक्कीसवीं सदी के तेरापंथ के आरोहण-उत्कर्ष में देखी जा सकती है। उन्होंने 'तिण्णाणं तारियाणं' सूत्र को चरितार्थ किया।

राष्ट्र के नैतिक उत्थान और मानव मन की शांति को गहराने वाले विशिष्ट प्रयत्नों के प्रति कृतज्ञभाव से उन्हें 'इंदिरा गांधी राष्ट्र एकता पुरस्कार', 'भारत ज्योति', 'युगप्रधान' जैसे कई अलंकरणों से नवाजा गया। पर उपाधियों और अलंकरणों से उपर निस्पृह साधक के रूप में उन्होंने नई रेखाएं उकेरीं। एक समय ऐसा भी आया जब उन्होंने अपने आचार्य पद का भी विसर्जन कर दिया और गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की भूमिका में साक्षीभाव से रमण किया।

उनके विराट कर्तृत्व और व्यक्तित्व को शब्दों में मढ़ना कठिन है। फिर भी आशा है, महामना के एक सौ बारहवें (112वें) जन्मदिवस (अणुव्रत दिवस) की दिव्यता का स्मरण जिज्ञासु के भीतर प्रेरणा प्रदीप का सुकून भरेगा।

वदना नन्दन तुलसी

● 'शासनश्री' साध्वी पानकुमारी (प्रथम) ●

वदना नन्दन तुलसी जगत में कमाल करग्या।
युगद्रष्टा युगस्रष्टा म्हारै हिवड़े बसग्या ।।

1. रोम-रोम में रमग्या तुलसी, सांस-सांस में श्री तुलसी।
भरी नाम में दिव्य शक्ति, अन्तरतम रा पट खुलसी।
गुरुवर आशीर्वर स्यूं, अमृत रा मेघ झरग्या।।

2. दर्शन मिलता जिण नैणा ने, वै आँख्या तिरपत होती।
जिनवाणी सुणता जो प्राणी, बै पाता जीवन ज्योति।
तुलसी रो ले शरणो, लाखां भक्तजन तरग्या ।।

3. नया-नया आयामां स्यूं, गौरव बढ़ायो शासन रो।
मानव धर्म बतायो जद बै, अणुव्रत बणग्यो जन-जन रो।
अनुभव वाणी स्यूं, देव खजाना सारा भरग्या।।

4. क्रोध मान माया मिट ज्यावै, बा शक्ति देवो जग नै।
कलह-कदाग्रह दूर हुवै, बा भक्ति देवो कलियुग नै।
प्रेक्षा-अनुप्रेक्षा स्यूं, सगलां रा कारज सरग्या।।

5. साधना सिद्धि बण ज्यावै, सिद्ध पुरुष कहता प्रतिपल।
जीणै री कला आवै, जद जीवन हो ज्यावै मंगल।
गणाधिपति उपाधि, आधि महाप्राण हरग्या ।।

तर्ज : नखरालो देवरियो

भारत ज्योति महाप्राण अभिनंदन तुम्हारा

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

भारत ज्योति महाप्राण अभिनंदन तुम्हारा।
अखिल विश्व को विश्व गुरु का मिलता सदा इशारा ।।

1. मां वदना के आंगन में, उतरे चांद-सितारे ।
दूज के अभिनव चंदा की, आरती उतारें।
चौसठ इन्द्र धरा पर आए, लेकर दिव्य नजारा।।

2. सत्यशोध का विश्वभारती नव आलोक बांटती।
यूनिवर्सिटी अभियान प्यारा अनेकान्त की आरती ।
समण मुमुक्षु देश-विदेशों, बांटे नया उजारा।।

3. जग में नैतिक मूल्यों का संवर्धन अणुव्रत करे।
मानव में इंसाफ की नयी रोशनी सदा भरे।
सदियों-सदियों अमर रहेगा, तुलसी नाम तुम्हारा।।

4. सपनों में नित आते हो बन विश्वास सहारे।
नयनों में वचनों में भरते नव उल्लास हमारे।
भाग्य विधाता शक्ति जगाओ, बदलो युग की धारा।।

तर्ज : जन्म-जन्म का

शपथ ग्रहण समारोह

विजयनगर, बेंगलुरु। तेरापंथ भवन, विजयनगर में टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट की नई कार्यकारिणी (कार्यकाल 2025–26) का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान टीपीएफ अध्यक्ष ललित बैंगानी ने नई कार्यकारिणी की घोषणा की। नवगठित टीम में डॉ. प्रकाश छाजेड़ और संजय मालू उपाध्यक्ष, कौशल खटेड़ मंत्री, आशीष सिंघी संगठन मंत्री, दीक्षा जैन, सुमित धारेवा, दीपिका जैन एवं विवेक सेठिया सहमंत्री, आशुतोष नाहर कोषाध्यक्ष और दीपिका जैन संयुक्त कोषाध्यक्ष के रूप में घोषित किए गए। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मंडोत ने अपने वक्तव्य में टीपीएफ की आवश्यकता, उद्देश्यों और समाज तथा प्रोफेशनल क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी साझा की। उन्होंने नई टीम को समाज और व्यवसाय दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर रहने का संदेश दिया। साध्वी संयमलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि टीपीएफ के सदस्य आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़े रहकर व्यावसायिक प्रगति और सामाजिक सेवा – दोनों में संतुलन बनाए रखें। इस अवसर पर 15 से अधिक तपस्वियों का सम्मान कर उनके तपोबल का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में सदस्यों ने परिचय सत्र के माध्यम से एक-दूसरे से परिचय कराते हुए आपसी नेटवर्किंग को सशक्त किया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ मंत्री कौशल खटेड़ ने सुचारु रूप से किया तथा धन्यवाद ज्ञापन दीक्षा जैन ने प्रस्तुत किया। समारोह में एम. सी. बलडोटा, पुष्पराज चोपड़ा, जितेंद्र आंचलिया, मंगल कोचर, कमलेश चोपड़ा सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 अक्टूबर - 02 नवम्बर, 2025

संबोधि

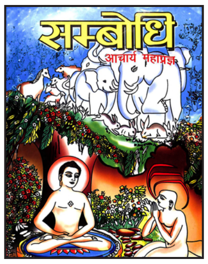

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

भगवान् महावीर ने शिक्षा के योग्य व्यक्ति के लिए कुछ विशेष बातों की ओर संकेत किया है। वे हैं- 'नम्रता, सहिष्णुता, दमितेन्द्रियता, अनाग्रह-भाव, सत्यरतता, क्रोधोपशांति, क्षमा, सद्भाव और वाक्-संयम ।

३७. पूर्व कुग्राहिताः केचिद्, बालाः पण्डितमानिनः।
नेच्छन्ति कारणं श्रोतुं, द्वीपजाता यथा नराः॥

जो पूर्वाग्रह रखते हैं और जो अज्ञानी होने पर भी अपने को पंडित मानते हैं, वे द्वीपजात अर्थात् अशिष्ट पुरुषों की भांति बोधि के कारण को सुनना नहीं चाहते।

विकास के क्षेत्र में पूर्व-मान्यता या पूर्वाग्रह का स्थान नहीं है। पूर्वाग्रही व्यक्ति के लिए सत्य-स्वीकृति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। उसे वही सत्य लगता है जो अपनी मान्यता पर खरा उतरता है। ऐसे व्यक्ति के लिए किसी ने कहा है-ये कुआं मेरे पिता का बनाया हुआ है। मैं इसी का पानी पीऊंगा। भले इसमें पानी खारा ही है। वे सम्यग् ज्ञान का उपदेश सुनना नहीं चाहते। अगर सुन भी लेते हैं तो उनके दिमाग में उसे प्रवेश नहीं मिल सकता। क्योंकि उनका दिमाग पहले से भरा रहता है। जब हम अपने दिमाग को रिक्त कर लेते हैं तब उसमें किसी अन्य शिक्षा का प्रवेश हो सकता है। भगवान् महावीर ने मेघ से कहा-मेघ ! पंडित-मन्यता और पूर्वाग्रह-इन दोनों से मुक्त होने पर ही सत्य का मार्ग अनावृत हो सकता है।

एक बार दो चींटियां आपस में मिलीं। एक नमक के पहाड़ पर रहती थी और दूसरी चीनी के पहाड़ पर । चीनी के पहाड़ पर रहने वाली चींटी ने दूसरी चींटी को आमंत्रित किया। नमक के पहाड़ पर रहने वाली चींटी वहां गई और एक दाना चीनी का मुंह में लिया। उसने थूकते हुए कहा-'अरे, यह भी खारा है।' वहां की निवासिनी चींटी ने कहा- 'बहन ! चीनी मीठी होती है। वह कभी खारी नहीं होती।' आगन्तुक चींटी ने कहा- 'मेरा मुंह तो खारा हो गया है। मैं कैसे मानूं कि चीनी मीठी होती है !' यह सुनकर वह असमंजस में पड़ गई। उसने आगंतुक चींटी का मुंह देखा। उसमें नमक की एक डली थी। उसने कहा-'बहन ! नमक को छोड़े बिना मुंह मीठा कैसे होगा?' यह संस्कारों के आग्रह की कहानी है। आग्रह को छोड़े बिना सत्य प्राप्त नहीं किया जा सकता।

३८. उपदेशमिदं श्रुत्वा, प्रसन्नात्मा महामना।
मेघः प्रसन्नया वाचा, तुष्टुवे प. पेष्ठिनम्॥

महामना मेघ यह उपदेश सुन बहुत प्रसन्न हुआ और प्रांजल वाणी से भगवान् महावीर की स्तुति करने लगा।

मेघ की जागृत आत्मा आराध्य के प्रति कृतज्ञ हो गई। मन का मैल धुल गया, वाणी विशुद्ध हो गई और शरीर शांत हो गया। मन अनंत श्रद्धा से भगवान् की आत्मा में विलीन हो गया। वाणी में अनंत श्रद्धा है और शरीर श्रद्धा से नत है। आत्मा की श्रद्धा शब्दों का चोला नहीं पहन सकती और पहनाया भी नहीं जा सकता। किन्तु श्रद्धालु के पास उसके सिवाय कोई चारा भी नहीं है। वह नहीं चाहता कि अनन्य श्रद्धा शब्दों के माध्यम से बाहर आए, लेकिन वाणी मुखरित हो जाती है। श्रद्धा के वे अल्प शब्द अनंत श्रद्धालुओं के लिए प्राण, जीवन और संजीवनी बन जाते हैं।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

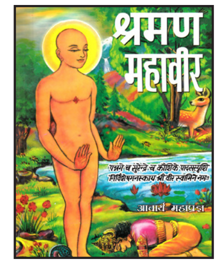

क्रान्ति का सिंहनाद

'गौतम। तपस्वी मुनि के बंधन शिथिल होते हैं, इसलिए उनके यत्-किंचित् कष्ट सहने से ही महान् शुद्धि हो जाती है।'

'यह कैसे होती है, भन्ते?'

'गौतम! सूखी घास का पूला अग्नि में डालने पर क्या होता है?'

'भन्ते! वह शीघ्र ही भस्म हो जाता है।'

'गौतम! गर्म तवे पर जल-बिन्दु गिरने से क्या होता है?'

'भन्ते! वह शीघ्र ही विध्वस्त हो जाता है।'

'गौतम! इसी प्रकार तपस्वी मुनि के बंधन-तंतु शीघ्र ही दग्ध और ध्वस्त हो जाते हैं।

भगवान् ने श्रमणों की साधना पद्धति को विकसित किया और साथ-साथ अन्य तपस्वियों के साधना-पथ को परिष्कृत रूप में अपनाया। उनके परिष्कार का सूत्र था-अहिंसा। हिंसापूर्ण कष्ट सहने की परम्परा चल रही थी। भगवान् ने कष्ट सहने को सर्वथा अस्वीकार नहीं किया, किन्तु उसमें हिंसा के जो अंश थे, उन सबको अस्वीकार कर दिया।

भगवान् ने कायक्लेश को तप के रूप में स्वीकार किया। पर उसका अर्थ शरीर को सताना नहीं है, अनशन करना नहीं है। उसका अर्थ है-आसन-प्रयोग से शरीर और मन की शक्तियों का विकास करना।

शरीर को सताना और सुख देना-इन दोनों से परे था भगवान् महावीर का मार्ग। उस समय कुछ दार्शनिक कहते थे-जैसा कारण होता है वैसा ही कार्य होता है। दुःख का बीज सुख का और सुख का बीज दुःख का पौधा उत्पन्न नहीं कर सकता। शरीर को दुःख देने से सुख कैसे उत्पन्न होगा?

कुछ दार्शनिकों का मत इसके विपरीत था। वे कहते थे वर्तमान में शरीर को दुःख देंगे तो अगले जन्म में सुख मिलेगा। सुख के लिए पहले कष्ट सहना होता है। जवानी में कष्ट सहकर पैसा कमाने वाला बुढ़ापे में सुख से खाता है।

महावीर ने इन दोनों मतों को स्वीकार भी नहीं किया और अस्वीकार भी नहीं किया। वे किसी मत को एकांगी दृष्टि से स्वीकार या अस्वीकार नहीं करते थे। उन्होंने सुख और दुःख का समन्वय साध लिया।

भगवान् ने बताया- 'मैं कार्य-कारण के सिद्धांत को स्वीकार करता हूं। सुख का कारण सुख होना चाहिए। प्रश्न है-सुख क्या है? उत्तर होगा जो अच्छा लगे वह सुख और जो बुरा लगे वह दुःख।'

महावीर ने कहा-

१. जो लोग इसलिए भूखे रहते हैं कि अगले जीवन में भरपेट भोजन मिलेगा।

२. जो लोग इसलिए घर को छोड़ते हैं कि अगले जीवन में भरा-पूरा परिवार मिलेगा।

३. जो लोग इसलिए धन को छोड़ते हैं कि अगले जीवन में राजसी वैभव मिलेगा।

४. जो लोग इसलिए ब्रह्मचारी बनते हैं कि अगले जीवन में अप्सराएं मिलेगी।

५. जो लोग इसलिए सब कुछ छोड़ते हैं कि अगले जीवन में यह सब कुछ हजार गुना बढ़िया और लाख गुना अधिक मिलेगा।

- वे सब लोग शरीर, इन्द्रिय और मन को सताने की दोहरी मूर्खता कर रहे हैं। यह संताप है, साधना नहीं है।

जो लोग इन सबको इसलिए छोड़ते हैं कि जो अपना नहीं है उसे छोड़ना ही सुख है। यह साधना है, संताप नहीं है। वस्तुओं को छोड़ना उसे अच्छा लगता है, इसलिए वह सुख है। उन्हें छोड़ने पर कष्ट झेलना अच्छा लगता है, इसलिए वह भी सुख है। इसे आप मान सकते हैं कि सुख से सुख उत्पन्न होता है या दुःख से सुख उत्पन्न होता है।

६. जनता की भाषा जनता के लिए

लता का प्राण पुष्प और पुष्प का प्राण परिमल है। परिमल की अभिव्यंजना से पुष्प और लता-दोनों जगत् के साथ तदात्म हो जाते हैं।

मनुष्य की तदात्मता भी ऐसी ही है। उसके चिन्तन-पुष्प में भाषा की अभिव्यंजना नहीं होती तो जगत् तदात्म से शून्य होकर सम्पर्क से शून्य हो जाता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री रत्नांजी (सरदारशहर) दीक्षा क्रमांक 189

साध्वीश्री ने जीवन में अनेक तपस्याएं की। प्राप्त विवरण के अनुसार सं. 1913 में 30 दिन, 1914 में मासखमण, 1915 में 30 दिन व 1916 में 10 दिन का तप किया। अन्य तप का उल्लेख प्राप्त नहीं है।

– साभार : शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समाज-सुधार के सूत्रधार : गुरुदेव श्री तुलसी

अगले क्षणों में जब सादे वेश वाली महिलाएं दृष्टिगोचार हुई, अश्वारोही ने अपशकुन नहीं माना। वह यथावत् आगे बढ़ता रहा। इस घटना ने आचार्यवर के उर्वर मस्तिष्क में समाज सुधार का बीज-वपन किया। उन्होंने सोचा-अपशकुन विधवा अबलाओं का नहीं, अपितु वैधव्य-परिचायक वस्त्रों का होता है। बीज क्रमशः अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित हुआ। आचार्यवर ने रूढ़ि-मुक्त समाज के सृजन की नव्य परियोजना बनाई। उन्होंने उन घावों को अपने मृदु हाथों से सहलाया जिनसे मानवता व्यथित थी।

अस्पृश्यता-निवारण

जैन समाज सैद्धान्तिक धरातल पर जातिवाद को नकारता हुआ भी व्यवहार के स्तर पर उसे स्थान देता था। हरिजनों को अस्पृश्य मानता था। वर्ण, जाति आदि के आधार पर ऊंच-नीच का निर्णय करता था। जैन अनुयायियों की ओर तथाकथित नीच मनुष्यों की इस दयनीय दशा को देखकर आचार्यवर के कोमल अन्तःकरण में करुणा की लहर दौड़ पड़ी। उन्होंने कहा-मानव मानव एक हैं, मनुष्य मनुष्य भाई-भाई हैं। कोई किसी का अछूत नहीं है। अछूत हैं जीवन की बुराइयां। उन्होंने अस्पृश्यता निवारण का उपदेश ही नहीं दिया, अपितु स्वयं उसका क्रियान्वयन किया। दशकों पूर्व आपश्री बीकानेर डिवीजन के अन्तर्गत 'छापर' नगर में आवासित थे। आपने अपने एक शिष्य को वहां की हरिजन वस्ती में जाकर धर्मोपदेश करने के लिए कहा। निर्दिष्ट साधु हरिजन मोहल्ले में गए और वहां प्रवचन किया। कथित नीच जाति के लोगों ने मद्य, मांस आदि के सेवन का परित्याग किया। साधु उपदेश देकर वापिस आए तो उनके साथ हरिजनों का एक झुण्ड भी था। पिछड़े वर्ग के लोग जब आचार्यश्री का चरण स्पर्श करने आगे बढ़े तो आपने उनको तनिक भी रोका नहीं, अपितु प्रोत्साहित किया। आचार्यवर यहां तक कहते हैं मैं उस हरिजन घर से भिक्षा भी ले सकता हूं, जहां मदिरा, मांस आदि का सेवन न होता हो। आचार्यश्री ने ऐसे घरों से भिक्षा ली भी है।

नारी जागरण

अणुव्रत आन्दोलन के साथ बाकी दृष्टि से भी कार्य प्रारम्भ हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की स्थापना को गई। उसके बाद स्थानीय महिला मण्डल के अन्तर्गत कन्या मण्डल और युवती मण्डल का भी गठन किया गया। इस परियोजना के माध्यम से शिक्षा, संस्कार, साहस और वक्तृत्व आदि अनेक विषयों पर महिलाओं की उल्लेखनीय प्रगति हुई। कुप्रथाओं के विनाश की तरफ गति हुई।

भावात्मक एकता

बिहार प्रदेश में किसी सज्जन ने आचार्यप्रवर से पूछा- आप हिन्दू हैं या मुसलमान? आचार्यवर ने उत्तर दिया- मेरे चोटी नहीं, अतः मैं हिन्दू नहीं और मैं इस्लाम परम्परा में जन्मा नहीं, इसलिए मुसलमान भी नहीं हूं। मैं तो मानव हूं। आचार्यवर ने भावात्मक एकता को परिपुष्ट करने के लिए एक घोष दिया

— "पहले इन्सान-इन्सान, फिर हिन्दु या मुसलमान।"

व्यसन-विमुक्ति

आज देश में शराब एक समस्या बन चुकी है। पूज्यश्री इस समस्या के समाधान के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। उन्होंने अपनी पदयात्रा के माध्यम से हजारों गांवों का स्पर्श किया है, लाखों मनुष्यों से सीधा सम्पर्क साधा है। एक बड़ी संख्या में लोगों को व्यसन-मुक्त बनाया है।

भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने एक बार कहा—'आचार्यश्री तुलसी एक पदयात्री हैं। आप समूचे देश में घूम-घूमकर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए कल्याणकारी कार्य कर रहे हैं। आप सरकार से मदद नहीं लेते प्रत्युत सरकार की मदद कर रहे हैं। आचार्यजी को सरकार की जरूरत नहीं है, सरकार को आचार्यजी की जरूरत है।'

मिलावट निरोध

आज व्यापारिक क्षेत्र में बेमेल मिलावट का बोलबाला है। एक समय था जब व्यक्ति के मन में अपने धर्म के प्रति आस्था थी, वह ऐसा कोई भी काम नहीं करना चाहता, जिससे उसका धर्म कलंकित होता। एक समय था, जब मनुष्य की चिन्तन-प्रणाली राष्ट्र-निर्माण के भावों से ओत-प्रोत थी। वह ऐसा कोई भी आचरण नहीं करता, जिससे राष्ट्रहित क्षतिग्रस्त होते। आज ये दोनों आस्थाएं ह्रास की ओर उन्मुख हैं। फलस्वरूप घी में चर्बी मिलाना, अंगरक्षक द्वारा प्रधानमंत्री की हत्या, कालाबाजारी अपराधों ने जन्म लिया है। देश की इस गम्भीर हालत से आचार्यवर का मानस चिन्तित हुआ। उन्होंने अपने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से देश में नैतिक वातावरण बनाने का अथक प्रयास किया और लोगों को बेमेल मिलावट न करने के लिए कृत संकल्प बनाया है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल
अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

नवम्बर 2025
सप्ताह के विशेष दिन

03 नवंबर	शुक्ला त्रयोदशी
05 नवंबर	चातुर्मासिक पक्खी
09 नवंबर	भगवान सुविधिनाथ जन्म कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री आसकरणजी (सुजानगढ़) दीक्षा क्रमांक 424

मुनिश्री ने विविध तपस्या कर तपोधनी मुनियों की पंक्ति में अपना नाम अंकित कर दिया। तप की कुल तालिका इस प्रकार है– उपवास/701, 2/24, 3/5, 4/6, 5/3, 6/2, 7/2, 9/1, 10/1, 11/1, 14/1, मासखमण/1। – साभार : शासन समुद्र –

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत हुआ रक्तदान शिविरों का आयोजन

राँची

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में राँची में रक्तदान अमृत महोत्सव 2025 के अंतर्गत रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् ने राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की इकाइयों, रेलवे आरपीएफ, सामाजिक संस्थाओं, सरकारी और निजी संस्थानों, कोचिंग सेंटरों, विश्वविद्यालयों, ब्लड बैंक और स्वयं परिषद् के सहयोग से मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव चलाया। राँची और आसपास के जिलों में कुल 20 शिविर और पूरे झारखंड में 40 से अधिक शिविर आयोजित किए गए, जिनमें राँची जिले में 500 से अधिक और पूरे झारखंड में 1200 से अधिक यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। शिविर के आयोजन में झारखंड के सभी ब्लड बैंक के मुख्य अधिकारी, समन्वयक, डॉक्टर, मेडिकल टीम और तकनीकी टीम का पूर्ण सहयोग रहा। राँची में सांसद महोदय के सहयोग से उनके आवास पर भी शिविर लगाया गया। इसके अतिरिक्त IIM राँची, YBN यूनिवर्सिटी, सेंट्रल यूनिवर्सिटी, कोटा एजुकेशन क्लास लालपुर, जेब्रोनिक्स पीपी कंपाउंड, सदर, हेल्थ पॉइंट और सेवा सदन ब्लड बैंक में भी शिविर आयोजित किए गए। लोगों ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया और सभी को अभातेयुप एवं ब्लड बैंक की ओर से सम्मान और प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। इस आयोजन में तेरापंथ युवक परिषद् के साथ श्री जैन श्वेतांबर ओसवाल संघ राँची, श्री तेरापंथी सभा राँची, साधुमार्गी जैन संघ राँची, श्वेतांबर जैन मूर्ति पूजक संघ, तेरापंथ महिला मंडल आदि के सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। रक्तदान शिविर के संचालन और प्रबंधन में अमरचंद बैंगानी, घेवरचंद नाहटा, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष अमित बैंगानी के निर्देशन में अनेकों कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। राँची और आसपास के रक्तदान शिविरों के आयोजन में झारखंड प्रभारी सिद्धार्थ चौरड़िया का विशेष सहयोग रहा, जबकि शिविर के प्रबंधन और संयोजन में मुख्य रूप से विशाल दस्सानी, ललित सेठिया, विकास नाहटा और सुरेश नाहटा की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

साउथ हावड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम एक साथ 7 स्थानों पर सम्पन्न हुआ। तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के अध्यक्ष आदेश चौरड़िया एवं उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए कहा कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य समाज में रक्तदान के महत्व को जागरूक करना एवं अधिक से अधिक लोगों को जीवनदायिनी सेवा से जोड़ना था। परिषद् के युवाओं की निष्ठा, संयोजकों की सक्रियता तथा दाताओं की भावना से कार्यक्रम ने एक ऐतिहासिक रूप लिया। इस पवित्र कार्य को क्षेत्र के विभिन्न स्थान आइडल ग्रांड, क्लबटाऊन रिवर्डल, गैंगस गार्डन, विक्रम विहार, विवेक विहार, ईओरा एवं जैन ट्यूटोरियलस में आयोजित किया गया, रक्तदाताओं ने भाग लेकर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई एवं 274 यूनिट रक्त संग्रहित किया। कार्यक्रम की सफलता के पीछे परिषद् के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, संयोजकों एवं स्वयंसेवकों का अथक परिश्रम रहा। साथ ही प्रायोजकों, सहयोगियों एवं समर्थकों का सहयोग इस आयोजन को भव्य स्वरूप देने में महत्वपूर्ण रहा। इस अभियान को सफल बनाने में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, महिला मंडल, प्रोफेशनल फोरम और अणुव्रत समिति हावड़ा का भी सक्रिय सहयोग मिला। सहमंत्री एवं प्रभारी भानु प्रताप चोरड़िया ने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में योगदान दिया।

नालासोपारा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेयुप नालासोपारा द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव अमृत महोत्सव 2.0 एवं अभातेयुप के गौरवशाली 61वें स्थापना दिवस के उपलक्ष में 3 स्थानों पर रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पारस बाफना एवम रमेश ढालावत ने किया। रक्तदान शिविर का उद्घाटन तेयुप अध्यक्ष अमित मेहता की अध्यक्षता में कमला उदयलाल मेहता परिवार ने किया। एमबीडीडी संयोजक किशन कोठारी, मनोज सोलंकी, भावेश गुंदेचा, पंकज खाब्या के निर्देशन में 3 कैंप में 366 यूनिट्स रक्त संग्रह कर सफल रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में विधायक राजन नायक, मनोज बारोट सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने पधारकर शिविर का अवलोकन किया और तेरापंथ समाज और एमबीडीडी टीम की इस मानव सेवा के लिए प्रसन्नता व्यक्त की। सभा संरक्षक मिश्रीमल चोरड़िया, सभा अध्यक्ष चंद्रप्रकाश धाकड ने स्वागत किया एवं आभार ज्ञापन जितेश हिरण ने किया।

अभातेयुप से शाखा प्रभारी मनीष रांका, हेमंत धाकड, विजय धाकड ने उपस्थित होकर टीम का उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए तेरापंथ सभा, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल ने अपने श्रम का नियोजन करते हुए कार्य किया। ब्लड बैंक के डायरेक्टर और उनकी पूरी टीम का अभिवादन मनोज सोलंकी और किशन कोठारी ने किया। एमबीडीडी टीम और सभी कार्यकर्ताओं का अभिवादन जितेश हिरण, मनोज सोलंकी, मुकेश मेहता ने किया।

तेयुप मंत्री उमेश कोठारी ने पधारे हुए सभी गणमान्य अतिथि, प्रायोजक एवं सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। एमबीडीडी कार्यक्रम के फोटो और वीडियो ग्राफी के लिए उपाध्यक्ष रवि राठौड़ ने अपना श्रम और योगदान दिया।

भुवनेश्वर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, भुवनेश्वर द्वारा जगन्नाथ पुरी धाम में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव 2025 का भव्य आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का शुभारंभ उड़ीसा के राज्यपाल हरि बाबू कामबापति एवं सांसद डॉ. संबित पात्रा के करकमलों से हुआ। उद्घाटन समारोह के पश्चात आयोजित रक्तदान शिविर में 383 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। SCS कॉलेज की संपूर्ण फैकल्टी टीम, प्रिंसिपल, शिक्षकों और वॉलंटियर्स ने शिविर संचालन में अनुकरणीय भूमिका निभाई। तेरापंथ युवक परिषद, भुवनेश्वर ने इसी अभियान के अंतर्गत कुल 12 रक्तदान शिविरों का सफल आयोजन किया, जिनमें 1275 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। यह अवसर परिषद के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा, क्योंकि पहली बार किसी शिविर का उद्घाटन राज्यपाल द्वारा किया गया, वहीं सांसद डॉ. संबित पात्रा ने स्वयं रक्तदान कर प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के सफल संचालन में कन्वीनर सिद्धार्थ चौरडिया, मंत्री सौरव बेताला, कोषाध्यक्ष दिलीप मनौत एवं को-कन्वीनर मोहित दूगड़ सहित पूरी टीम का योगदान उल्लेखनीय रहा। साथ ही, तेरापंथ सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल, परिषद के सलाहकारों एवं पदाधिकारियों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का सफल हुआ आयोजन

नई दिल्ली।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा उद्घोषित और अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ।

सप्ताहभर चलने वाले इन कार्यक्रमों का आयोजन बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन, विवेक विहार सहित दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर किया गया।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस व अणुव्रत गीत महासंगान दिवस के प्रथम दिवस का आयोजन ओसवाल भवन में समिति सदस्यों के अणुव्रत गीत महासंगान से हुआ। बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने अपने मंगल उद्बोधन में समाज के सभी वर्गों, जातियों, साहित्यकारों और प्रबुद्ध व्यक्तियों को अणुव्रत से जोड़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन की प्रासंगिकता बताते हुए कहा कि पूर्व में कई राजनीतिज्ञ, बुद्धिजीवी और साहित्यकार जुड़े हुए थे, लेकिन वर्तमान में इसे और अधिक सशक्त बनाने की आवश्यकता है। अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत के महत्व और अन्य कार्यक्रमों की जानकारी साझा की। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के गणमान्य सदस्य, तेरापंथी समाज के प्रतिनिधि और स्वर संगम में पुरस्कार प्राप्त प्रतिभागी उपस्थित थे। इसी दिन अणुव्रत संस्कार केंद्र के शुभारंभ बैनर का लोकार्पण भी मुनिश्री के सान्निध्य में किया गया।

अहिंसा दिवस का आयोजन महात्मा गाँधी की समाधि राजघाट पर किया गया। अणुव्रत प्रार्थना और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित अहिंसा गीत का संगान हुआ। इस अवसर पर विधायक डॉ. अनिल गोयल और अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अहिंसा और संयम के महत्व पर अपने विचार साझा किए।सांप्रदायिक सौहार्द दिवस और सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन ओसवाल भवन में हुआ, जिसमें पारसी, बौद्ध, ईसाई, हिंदू, मुस्लिम, सिख, ब्रह्माकुमारी और आर्य समाज के प्रमुख प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन धर्म, जाति और संप्रदाय से ऊपर उठकर नैतिकता, संयम और मानवता का संदेश देता है।

पर्यावरण शुद्धि दिवस के तहत यमुना घाट पर स्वच्छता अभियान और पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। अणुव्रत समिति के सहयोग से नगर निगम और सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग ने भी इस कार्यक्रम में सहभागिता की।

नशा मुक्ति दिवस और अणुव्रत संस्कार केंद्र का शुभारंभ गोकलपुर गंगा विहार में किया गया। नशामुक्ति रैली स्कूलों से प्रारंभ होकर अणुव्रत संस्कार केंद्र में संपन्न हुई।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने कहा कि युवा नशे और मोबाइल की लत से प्रभावित हो रहे हैं, ऐसे में अणुव्रत संस्कार केंद्र जागरूकता और शिक्षा का महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा। कार्यक्रम में विद्यालयों के विद्यार्थी, महिलाएं और क्षेत्र के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज़ पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

ऐतिहासिक रही दक्षिण मुंबई की गुरुदर्शन यात्रा

अहमदाबाद/ दक्षिण मुंबई

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी के मंगल सान्निध्य में भगवती संवत्सरी के खमतखामणा व गुरु दर्शन के लिए साध्वी शिवमालाजी की प्रेरणा से 120 भाई बहनों का संघ श्रीचरणों में उपस्थित हुआ।

आचार्य श्री महाश्रमणजी ने महती कृपा कर सेवा का अवसर प्रदान किया। सभी भाई बहनों ने सामूहिक वंदना पाठ कर गुरुदेव से खमतखामणा किया। सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने चार्तुमास में हुए कार्यक्रमों के साथ-साथ वर्तमान में चल रही गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी।

भाई बहनों द्वारा सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी गयी। पूज्य प्रवर ने अवशेष चातुर्मास का पूरा लाभ लेने की प्रेरणा देते हुए धर्म ध्यान, सामायिक आदि के लिए प्रेरित किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के सान्निध्य में महिला मंडल अध्यक्ष लतिका डागलिया ने, मुख्य मुनि श्री महावीरकुमार जी के सान्निध्य में फाउंडेशन अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़ एवं साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद के गिरीश शिसोदिया ने दक्षिण मुंबई चार्तुमास की जानकारी दी। साध्वीप्रमुखाश्री ने 25 बोल कंठस्थ करने की प्रेरणा दी, मुख्य मुनि श्री ने ज्ञानशाला में बच्चों की सहभागिता तथा साध्वीवर्या जी परिवार सहित गुरु दर्शन में बच्चों को भी साथ लाने की प्रेरणा दी। संघ में सुरेश बाफना का विशेष सहयोग रहा। संघ की व्यवस्था में नितेश धाकड़ का श्रम सार्थक रहा।संचालन सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

मंगल भावना एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन

तिरुपुर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तिरुपुर द्वारा जैन तेरापंथ भवन में सरदारशहर निवासी एवं इरोड प्रवासी मुमुक्षु हनुमानमल दुगड़ के सम्मान में मंगल भावना एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ।

मुमुक्षु दुगड़ ने अपने वक्तव्य में बताया कि उन्होंने धर्मसंघ की सेवा में अपना जीवन समर्पित किया और संयम धारण हेतु निरंतर प्रयासरत रहे। शुभ योग के समन्वय पर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने उन्हें मुमुक्षु के रूप में स्वीकार कर दीक्षा की आज्ञा दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीतिका से हुआ, जिसके बाद अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने स्वागत भाषण दिया।

महिला मंडल अध्यक्ष सरिता श्यामसुखा, परिषद अध्यक्ष श्रेयांश नाहर, विनोद बांठिया एवं जितेंद्र भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए। भंसाली ने श्री दुगड़ का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि वे दो दशकों से तप-त्याग की साधना में रत हैं और वर्तमान में उनका सातवां वर्षीतप चल रहा है। उपासिकाओं मधु कोठारी, उषा डागा और संतोष आंचलिया ने मंगलकामनाएँ दीं।

चेतन बरडिया ने देश-विदेश के संस्कारकों की ओर से भावनाएँ व्यक्त कीं, जबकि शांतिलाल झाबक ने मुक्तक प्रस्तुत किया। सभा मंत्री मनोज भंसाली ने आभार ज्ञापन किया और कार्यकारिणी द्वारा मोमेंटो प्रदान कर दुगड़ जी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन जितेंद्र भंसाली ने कुशलता से किया।

मासखमण तप अभिनंदन कार्यक्रम

गांधीनगर, बैंगलोर।

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में प्रीति दक द्वारा 31 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान करने पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गांधीनगर, बेंगलुरु द्वारा मासखमण तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुनिश्री ने तपस्या की महिमा बताते हुए कहा कि तपस्या जीवन का श्रृंगार है और इससे आत्मा की तेजस्विता बढ़ती है। उन्होंने आगे कहा कि तपस्या के लिए विशेष आत्मबल और मनोबल की आवश्यकता होती है और तपस्वियों पर गुरु कृपा का प्रसाद बरसता है।

मुनिश्री ने यह भी कहा कि इस वर्ष गांधीनगर तेरापंथ भवन में तपस्या का उत्साह बहुत अच्छा देखा गया है, और पर्युषण के बाद भी मासखमण जैसी बड़ी तपस्याएँ आयोजित हो रही हैं। मेवाड़ ओसवाल साजनान समाज के अध्यक्ष ललित मांडोत ने साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी का संदेश वाचन कर मंगलकामना व्यक्त की।

'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमार जी ने तपस्या के संदर्भ में गीत प्रस्तुत किया। सभा एवं सभी संस्थाओं की ओर से प्रीति दक का अभिनंदन किया गया। मासखमण तप अनुमोदना में परिवारजन अमृता, शालू दक, भगवती बाई, मंजू बाई, रेखा और सुमन दक ने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से सहभागिता की।

तेरापंथ सभा के मंत्री विनोद छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया कि मुनि पुलकित कुमारजी की प्रेरणा से गांधीनगर तेरापंथ भवन में यह 11वां मासखमण तप अभिनंदन संपन्न हुआ।

रक्तदान शिविर का आयोजन

कांटाबांजी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन किया गया। यह विशाल रक्तदान शिविर स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के आयोजन में तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। परिषद के अध्यक्ष मनीष जैन की अध्यक्षता में और अंकित जैन एवं निखिल जैन के संयोजन में आयोजित इस शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

परिषद के मंत्री श्रेयांश जैन ने बताया कि मुख्य अतिथियों के रूप में रायपुर (छत्तीसगढ़) के निःशक्तजन वित्त एवं विकास निगम के अध्यक्ष लोकेश कावड़िया, रायपुर नगर भाजपा अध्यक्ष राजेंद्र जैन, स्थानीय विधायक लक्ष्मण बाग, पूर्व विधायक हाजी अयूब खान और नगरपाल बरियाम सिंह सलूजा उपस्थित रहे। विधायक लक्ष्मण बाग ने तेरापंथ युवक परिषद की इस प्रेरणादायी पहल की सराहना की और अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया।

शिविर में डॉ. गोविंद अग्रवाल और उनकी टीम ने सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर कुल 375 लोगों ने रक्तदान किया, जिनमें 30 से अधिक जोड़े भी शामिल थे। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष युवराज जैन, मंत्री सुमित जैन, महिला मंडल से अध्यक्षा बिंदिया जैन, सचिव सपना जैन और उनकी पूरी टीम उपस्थित रही। रक्तदान शिविर के संयोजक अंकित जैन और निखिल जैन के साथ सह-संयोजक गौरव जैन, अविनाश जैन, यश जैन, मयंक जैन सहित अन्य सदस्यों ने पूरी तैयारी और संचालन में सहयोग दिया। स्थानीय ओडिशा ब्लड बैंक के तकनीशियन और कर्मचारियों का भी पूर्ण सहयोग रहा।

इस रक्तदान शिविर के प्रायोजक जैन ब्रदर्स, जैन किंग क्वालिटी सप्लायर्स, अनिल जैन, बिकाश जैन, तुलसी नेक्स्ट और गौतम प्रसाद जैन (बेलपाड़ा) थे।

अंत में आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष अंकित जैन ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 अक्टूबर - 02 नवम्बर, 2025

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह विविध कार्यक्रमों के साथ संपन्न

गंगापुर।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस से प्रारंभ हुआ अणुव्रत सप्ताह नगर में विविध आयोजनों और सारगर्भित संदेशों के साथ संपन्न हुआ। सप्ताह भर चले इन कार्यक्रमों का आयोजन अणुव्रत मंच गंगापुर की संयोजिका प्रीति रांका के नेतृत्व में किया गया, जिसमें मुनि प्रसन्न कुमार जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। अणुव्रत प्रेरणा दिवस के अवसर पर यूरोपियन स्कूल में अणुव्रत गीत महासंगान हुआ। मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत सभी के लिए है — यह मानवता का धर्म है।

आचार्य श्री तुलसी ने युग की आवश्यकता के अनुरूप अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया और इसे विश्व-उपयोगी बनाया। मुनिश्री ने कहा कि वैज्ञानिकों ने 'अणुबम'" दिया, पर आचार्य श्री तुलसी ने 'अणुव्रत' दिया, जो विश्व शांति का मार्ग है।

अहिंसा दिवस के अवसर पर कालू कल्याण कुंज में मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि विश्व की अधिकांश समस्याओं की जड़ अनावश्यक हिंसा है। संयम और अहिंसा ही स्थायी शांति का मार्ग हैं। मुनि धैर्य कुमार जी ने भी संयम और संतोष के जीवन-मूल्यों को अपनाने का आह्वान किया। सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि समादर, सहिष्णुता और समझ से ही सौहार्द संभव है।

उन्होंने कहा कि धर्म और सम्प्रदाय को संतरे की तरह समझना चाहिए — छिलका सम्प्रदाय है और रस आत्मधर्म। कार्यक्रम में विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधि, संत और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। पर्यावरण दिवस पर मुनि प्रसन्न कुमार जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि 'वृक्ष हैं तो जीवन है।' उन्होंने बताया कि इंसान की पहली आवश्यकता श्वास है, जो वृक्षों से मिलती है। आज अति-सुविधा और भोगवादी प्रवृत्तियों के कारण पर्यावरण संकट बढ़ रहा है।

बच्चों को उन्होंने प्रकृति के संरक्षण का संकल्प दिलाया। मुनि धैर्य कुमार जी ने बच्चों को विद्यार्थी अणुव्रत का संकल्प करवाया। नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि आज नई पीढ़ी बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, शराब और स्मैक जैसे नशों की गिरफ्त में आ रही है। उन्होंने युवाओं को सत्संग, आत्मनियंत्रण और नशा मुक्ति शिविरों में भाग लेने की प्रेरणा दी।

अनुशासन दिवस पर अणुव्रत प्रवक्ता रमेश हिरण ने आलोक विद्या मंदिर में कहा कि किसी भी संगठन की सफलता अनुशासन पर निर्भर करती है। भारतीय सेना, आरएसएस और तेरापंथ धर्मसंघ का अस्तित्व अनुशासन की ही देन है। अणुव्रत मंच की रेखा नौलखा ने बच्चों को अनुशासित जीवन अपनाने की प्रेरणा दी, जबकि संयोजिका प्रीति रांका ने प्राणायाम का अभ्यास करवाया। जीवन विज्ञान दिवस, जो अणुव्रत सप्ताह का समापन दिवस था, जूनावास स्कूल में मनाया गया। मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी है।

जीवन विज्ञान के प्रयोग व्यक्ति के भीतर सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं। मुनि धैर्य कुमार जी ने महाप्राण ध्वनि के लाभ बताते हुए बच्चों को नशामुक्त जीवन का संकल्प दिलाया।

सप्ताहभर चले इन आयोजनों में गंगापुर के विद्यालयों, सामाजिक संस्थाओं एवं विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों की उल्लेखनीय भागीदारी रही। मंच संयोजिका प्रीति रांका, सरोज भंडारी, रेखा नौलखा, निधि महता, भावेश जैन, अंजु रांका, प्रियंका नौलखा सहित अणुव्रत मंच के सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

पृष्ठ 1 का शेष

हिंसा से बचने...

आरंभजा हिंसा वह है जो जीवन-निर्वाह हेतु आवश्यक कर्मों, जैसे कृषि, भोजन-पानी आदि में होती है। यह अनिवार्य होते हुए भी निन्दनीय नहीं है, किंतु इसमें भी न्यूनता का प्रयास होना चाहिए। प्रतिराधजा हिंसा अपने, परिवार या राष्ट्र की रक्षा में अनिवार्य रूप से हो सकती है, वह भी निन्दनीय नहीं है। परंतु संकल्पजा हिंसा – जो क्रोध, लोभ, मोह या अहंकारवश जानबूझकर की जाती है – वह अत्यंत निन्दनीय है। गृहस्थ को ऐसी हिंसा से पूर्णतः बचना चाहिए।

आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने कहा कि सन् 2021 में नागपुर स्थित आरएसएस कार्यालय में मेरा जाना हुआ था, और आज मोहनजी भागवत हमारे बीच पधारे हैं। प्रायः प्रतिवर्ष आपके आगमन का क्रम बना रहता है, यह आपकी विनम्रता और उदारता का प्रतीक है। ऐसे व्यक्तित्व जो चिंतनशील, ज्ञानी, परोपकारी और प्रभावशाली हों, उनके सान्निध्य से समाज का कल्याण होता है। कार्यक्रम के समापन अवसर पर अहमदाबाद चातुर्मास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रायचंद लूणिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

परम की ओर ले...

चातुर्मास के बाद विहार करना भी साधु चर्या के नियमों का हिस्सा है। साधु-साध्वियों को अपने भीतर महामुनित्व स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी की पुस्तक 'सुखी बनो' का साध्वी राजुलप्रभाजी द्वारा कृत अंग्रेजी अनुवाद 'बी हैप्पी' जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा लोकार्पित की गई। आचार्य प्रवर की सन्निधि में मुनि मणिलालजी एवं मुनि अभयकुमारजी की स्मृति सभा आयोजित की गई। आचार्य प्रवर ने दोनों मुनियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया और चतुर्विध धर्मसंघ को उनके प्रति मध्यस्थ भाव व्यक्त करने हेतु चार लोगस्स का ध्यान करवाया। स्मृति सभा में मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी और साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने दोनों आत्माओं के ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना की। मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी और समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने भी उनके प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

बोलती किताब

अपना दर्पण : अपना बिम्ब

जीवन में सफल होने के लिए भावक्रिया जरूरी है और भावक्रिया के लिए शब्दबोध, अर्थबोध तथा चेतना का उपयोग—ये तीनों बातें जरूरी हैं। ये तीनों बातें पूरी होती हैं तब व्यक्ति जीवन में सफल होता है। व्यापार के क्षेत्र में दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति, जो सफल हुए हैं, उन्होंने बड़ी तन्मयता और एकाग्रता से कार्य किया है। उनकी एकाग्रता एक समाहित योगी जैसी एकाग्रता थी। केवल उसमें ही ध्यान रहा और सफलता की चोटी पर पहुंच गए। एकाग्रता और भावक्रिया के अभाव में सफलता उपलब्ध नहीं होती। अभी कुछ वर्ष पहले ओलम्पिक खेलों का आयोजन हुआ। आश्चर्य है—छोटे-छोटे राष्ट्रों के लोग पांच-पांच, दस-दस स्वर्ण पदक जीत गए और भारत जैसा विशाल देश एक भी स्वर्ण पदक प्राप्त नहीं कर सका। कारण बहुत स्पष्ट है—हम भावक्रिया करना जानते ही नहीं हैं।

जहां विक्षेप है वहां प्रकम्पन है। व्यक्ति स्थिर रहना जानता ही नहीं है। दो मिनट स्थिर बैठना भी उसके लिए संभव नहीं होता। जब भीतर में विक्षेप है तो शरीर में भी विक्षेप होगा। व्यक्ति बीस मिनट स्थिर रहना सीख लेता है तो मानना चाहिए कि भीतर में थोड़ा विक्षेप कम हुआ है। जो ध्यान शिविर में पहली बार आते हैं, उनके लिए कुछ दिन बहुत अटपटे रहते हैं। इतना विक्षेप होता है कि एक घंटा के ध्यान में पच्चीस-तीस बार आसन बदल लेते हैं। पांच-छह दिन की साधना के बाद ऐसी स्थिति बनती है—व्यक्ति एक घंटा में एक बार भी आसन नहीं बदलता। विक्षेप की कमी से ऐसा संभव बनता है।

प्रतिक्रिया मानवीय स्वभाव जैसा बन गई है। चाहे गृहस्थ है या मुनि, तब तक वीतराग नहीं हो जाता या क्षपक श्रेणी में नहीं चला जाता तब तक प्रतिक्रिया से सर्वथा विरक्त होना असंभव जैसी बात है। क्रिया एक होती है, पर प्रतिक्रियाएं अनेक प्रकार की होती हैं। जयाचार्य ने संविभाग की व्यवस्था कर एक प्रकार की क्रिया की। किंतु उसकी प्रक्रियाएं अनेक प्रकार से हुई। क्रिया की प्रतिक्रिया और प्रतिक्रिया की फिर प्रतिक्रिया हो जाती है। प्रतिक्रिया से प्रतिक्रिया का एक सिलसिला सा चल पड़ता है। प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला सी बन जाती है।

प्रतिक्रिया-विरति और मैत्री में गहरा संबंध है। प्रतिक्रिया की विरति होगी तो मैत्री भाव बढ़ता चला जाएगा और प्रतिक्रिया की अविरति होगी तो प्रतिक्रिया बढ़ती चली जाएगी, शत्रुता का भाव समाप्त नहीं होगा। जहां प्रतिक्रिया होती है, शत्रुता का भाव होता है, वहां मन में बुरे विचार और बुरे भाव आएंगे। बहुत सारे लोगों के मन में बुरी भावनाएं भरी रहती हैं। वे प्रतिक्रिया की भाषा में ही सोचते हैं। अमुक व्यक्ति ने मेरा यह कर दिया, अमुक व्यक्ति ने मेरा वह कर दिया। न जाने कितने व्यक्तियों से जुड़ी हुई घटनाओं का भार अकेला व्यक्ति अपने सिर ढोता जा रहा है। कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, जो कभी भार ढोते ही नहीं हैं। कोई घटना घटती है। व्यक्ति सोचता है—जो हो गया, वह हो गया। उसका भार ढोने का अर्थ क्या है? वह घटना को वहीं समाप्त कर देता है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

साइक्लोथोन रैली का आयोजन

चेन्नई।

अभातेयुप और अणुविभा के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् एवं अणुव्रत समिति, चेन्नई की संयुक्त आयोजना में साइक्लोथान रैली का आयोजन नेवी परिसर से हुआ।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के मिशन नशामुक्त युवा के अंतर्गत देश भर में सौ से अधिक जगहों पर साइकिल रैली का आयोजन किया गया। इसी के अंतर्गत भारतीय नेवी के साथ मिलकर चेन्नई में भी इसका आयोजन किया गया। तमिलनाडू और पुडुचेरी नेवी ऑफिसर इंचार्ज कमांडर सुव्रत मागोन के निर्देशन में लेफ्टिनेंट कमांडर हरि शंकर ने रैली को झंडा दिखाकर रवाना किया। महानगर के विभिन्न क्षेत्रों में नशामुक्ति एवं मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के बारे में जानकारी देते हुए पुनः साइकिल रैली नेवी परिसर में पहुंची। इस अवसर पर भारतीय नौसेना के अनेकों तटरक्षकों के साथ तेयुप अध्यक्ष विशाल सुराणा, मंत्री मुकेश आच्छा, संयोजक अंकित चौरडिया, अणुव्रत समिति अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत, उपाध्यक्ष स्वरूप चन्द दाँती, मंत्री कुशलराज बांठिया, कन्वीनर डी भरत मरलेचा के साथ तेयुप, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल के सदस्य उपस्थित रहे।

सहिष्णुता का होता रहे उत्तरोत्तर विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
16 अक्टूबर, 2025

मानव मन के रूपान्तरक जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वाङ्मय में 'परीषह' शब्द का उल्लेख मिलता है। जो कष्ट निर्जरा और मार्ग-अच्यवन के लिए सहन किए जाते हैं, वे परीषह कहलाते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में साधु के बाईस परीषहों का वर्णन मिलता है, जैसे – क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण आदि। जो साधु इन परीषहों को सहन कर लेता है, वह साधु जीवन में सफलता के उच्च शिखर तक पहुँच सकता है।

आचार्यश्री ने कहा कि जैसे रणभूमि में सैनिक प्राणों की आहुति दे दे पर पीछे नहीं हटता, वैसे ही साधु का जीवन भी एक आध्यात्मिक समरांगण है। साधु को परीषहों से संघर्ष करते हुए संयम के मार्ग पर दृढ़ रहना चाहिए। जो साधु कठिनाइयों से विचलित न हो, संयम के पथ पर स्थिर रहे, वही इस जीवन का सच्चा विजेता है। गृहस्थ जीवन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। जब मनुष्य इन स्थितियों में समता और शांति बनाए रखते हुए धर्ममार्ग पर अग्रसर रहता है, तो वही उसकी सफलता है। कठिनाइयाँ सामान्य से लेकर महान लोगों तक, सभी के जीवन में आती हैं। ऐसे में सहिष्णुता और स्थिरता ही व्यक्ति की असली शक्ति होती है।

आचार्यश्री ने कहा कि शिक्षा संस्थान – विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि – ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ विद्यार्थियों में संस्कार और सहिष्णुता का विकास करें। विद्यार्थियों को कठिन परिस्थितियों में भी नैतिकता, ईमानदारी और सिद्धांतों से डिगना नहीं चाहिए। केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि चरित्र का विकास भी समान रूप से आवश्यक है। कोरा ज्ञान अधूरी उपलब्धि है; ज्ञान के साथ चरित्र का जुड़ना अनिवार्य है। गृहस्थों के लिए भी जहां ज्ञान का महत्व है, वहीं आचरण और मर्यादा का भी अपना विशिष्ट स्थान है।

प्रेक्षा विश्व भारती स्थित महाप्रज्ञ विद्या निकेतन के विद्यार्थियों के संदर्भ में आचार्यश्री ने मंगल संदेश दिया कि उनमें उत्तम प्रज्ञा, उत्तम संस्कार और उत्तम आचरण का विकास हो। मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती द्वारा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की पुस्तक 'तेरापंथ दर्शन' का लोकार्पण किया गया।

इस अवसर पर आचार्यश्री ने मंगल प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात् महाप्रज्ञ विद्या निकेतन के विद्यार्थियों ने विविध प्रस्तुतियाँ दीं। विद्यालय प्रबंधन समिति के चेयरमैन मनोहर कोठारी, पवन अग्रवाल तथा छात्रा मेघा सन्यासी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का भी लोकार्पण आचार्यश्री की पावन उपस्थिति में हुआ। इसी क्रम में डॉ. बलवंत चोरड़िया द्वारा रचित पुस्तक का भी लोकार्पण किया गया।

अणुव्रत इंसानियत का पाठ सिखाने वाला विशिष्ट अभियान

सूरत।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के आचार्य डॉ. शिव मुनि जी के सान्निध्य में एवं अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति चलथाण द्वारा श्री शिवाचार्य चातुर्मास प्रवास स्थल अवध संग्रीला में अणुव्रत उद्बोन सप्ताह का प्रथम दिवस अणुव्रत प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में श्रमण संघीय महामंत्री शिरीष मुनि जी ने कहा - वर्तमान युग में सभी लोग व्यक्तित्व पर ध्यान दे रहे हैं। इस संसार में दो चीजें हैं - आत्मा और शरीर। अस्तित्व और व्यक्तित्व। अस्तित्व आत्मा से जुड़ा हुआ है जबकि व्यक्तित्व शरीर से जुड़ा हुआ है।

आज आदमी अपने व्यक्तित्व पर ध्यान दे रहा है लेकिन अपने अस्तित्व को भूल गया है। केवल व्यक्तित्व को सुधारने की बात होती है तो वहां आत्मा का उद्धार नहीं होता। जहां आत्मा के अस्तित्व की बात होती है वहां आत्मा की शुद्धि का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन कोई सामान्य आंदोलन नहीं है। वह व्यवहार जगत में रहते हुए आत्म शुद्धि और आत्म विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अणुव्रत विश्व भारती की राष्ट्रीय संगठन मंत्री पायल चोरडिया ने कहा - अणुव्रत का मार्ग जीवन शुद्धि का मार्ग है। वह चारित्रिक विकास का मार्ग है। किसी भी जाति या संप्रदाय से जुड़ा हुआ व्यक्ति अणुव्रत का सदस्य बन सकता है।

अणुव्रत वर्तमान युग की सभी चुनौतियों का सटीक समाधान दे सकता है। आज के कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अणुव्रत सेवी' अर्जुन मेडतवाल ने कहा -' आदमी के पास आत्म-विकास के दो मार्ग हैं। महाव्रत का मार्ग और अणुव्रत का मार्ग। अणुव्रत का मार्ग सर्व सुलभ है। गृहस्थ आश्रम में रहकर भी सांसारिक कार्यों से जुड़ा रहकर भी व्यक्ति अणुव्रत का मार्ग अपना सकता है। जिस प्रकार से अणुबम में प्रचंड शक्ति है, उसी प्रकार से अणुव्रत में भी प्रचंड शक्ति है। फर्क इतना है कि अणु बम की शक्ति विनाशकारी है जबकि अणुव्रत की शक्ति विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

अणुव्रत समिति चलथाण की अध्यक्ष कांता नौलखा ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति चलथाण के मंत्री ज्ञानचंद दूगड़ ने किया। तेरापंथ सभा चलथाण के मंत्री संजय बाफना ने आभार ज्ञापन किया।

संयम जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर अभ्यर्थना समारोह

नोखा।

ध्यान, योग और संयम साधना की पर्याय साध्वी राजीमती जी, तेरापंथ धर्म संघ की विशिष्ट और विलक्षण साध्वी, ने आचार्य श्री तुलसी के करकमलों से दीक्षा ली। इसके पश्चात उन्होंने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी से योग एवं ध्यान साधना का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्तमान युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण की करुणा दृष्टि और विश्वास भी उन्होंने अर्जित किया। 75 वर्ष तक संयम जीवन का पालन करना अत्यंत दुर्लभ और प्रेरणादायी दस्तावेज है। आंचलिया परिवार ने साध्वी राजीमती जी की सुखद संयम यात्रा के वर्धापन दिवस पर भावाभिव्यक्ति दी और शतायु एवं दीर्घायु होने की कामना की। कुसुम आंचलिया, विनोद आंचलिया, आंचल सुराणा, अरुण, भरत सहित अन्य सदस्यों ने साध्वी राजीमती जी को 93 वर्ष की आयु में भी पुरुषार्थी और तेजस्वी साध्वी बताते हुए भावांजलि अर्पित की।

जोरावरपुरा से पधारी साध्वी बसंतप्रभाजी और साध्वी संकल्पश्री जी ने साध्वी राजीमती जी को तेरापंथ धर्म संघ की अद्भुत और विलक्षण साध्वी बताया। राष्ट्रीय उपासक संयोजक सूर्य प्रकाश सामसुखा ने ध्यान, योग और संयम के माध्यम से प्राप्त अनुभव साझा किए। आचार्य श्री महाश्रमण का पावन संदेश साध्वी समताश्री जी ने उपस्थितों के समक्ष वाचन किया। रूपचंद दुगड़ (सभा अध्यक्ष), शुभकरण चोरड़िया, रणजीत दुगड़, डॉक्टर प्रेमसुख मरोठी, मुमुक्षा शांता जैन सहित अनेक गणमान्यजनों और श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कुशल संचालन साध्वी मनोज्ञप्रभा जी ने किया।

जैन विद्या परीक्षा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन उत्साह से संपन्न

जलगांव। तेरापंथ सभा जलगांव के अंतर्गत जैन विद्या परीक्षा भाग 1 से 4 ऑनलाइन, भाग 5 से 7 ऑनलाइन एवं भाग 8 से 9 ऑफलाइन सानंद संपन्न हुई। निरीक्षक के रूप में स्थानीय सभा अध्यक्ष पवन सामसुखा, उपाध्यक्ष नोरतमल चौरडिया, महिला मंडल अध्यक्ष विनीता समदड़िया, युवक परिषद अध्यक्ष पंकज सुराणा, T.P.F.अध्यक्ष खुशबू बाफना, टेक्निकल विजन प्रमुख उमेश सेठिया व केंद्र व्यवस्थापिका भारती श्यामसुखा की उपस्थिति में प्रश्न पत्र का पैकेट खोला गया। जलगांव क्षेत्र में परीक्षा हेतु कुल 103 फॉर्म भरे गए, जिनमें से 98 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। उमेश सेठिया ने परीक्षाओं के लिए सेन्ट्रोनिक्स का स्थान उपलब्ध करा कर सहयोग दिया।

शक्ति और बुद्धि का उपयोग करें आत्म विकास के लिए : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
14 अक्टूबर, 2025

अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जब व्यक्ति विषयासक्त हो जाता है, तो उसका शरीर और मन दोनों प्रभावित हो जाते हैं। तीव्र आसक्ति के कारण व्यक्ति अपने ऊपर नियंत्रण खो बैठता है — वह अनुचित आहार लेता है, आवश्यकता से अधिक भोग करता है, और परिणामस्वरूप उसका शरीर दुर्बल हो जाता है। शरीर की दुर्बलता व्यक्ति को पीड़ा देती है और वह अच्छे कार्यों में भी समर्थ नहीं रह पाता।

आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए स्वस्थ शरीर, दृढ़ मनोबल और शांत मानसिक स्थिति का होना अत्यंत आवश्यक है। जब साधन-सामग्री, शारीरिक बल और मानसिक संतुलन तीनों का समन्वय हो, तभी व्यक्ति सूझ-बूझ से उत्तम कर्म कर सकता है। किंतु इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि व्यक्ति अपनी शक्ति का उपयोग किस दिशा में करता है। शक्ति का उपयोग विनाशकारी कार्यों में भी किया जा सकता है और रचनात्मक, लोक-कल्याणकारी कार्यों में भी। यह मनुष्य के विवेक पर निर्भर करता है कि वह अपनी शक्ति और बुद्धि का उपयोग किस उद्देश्य के लिए करता है। बुद्धि का प्रयोग यदि समस्याएँ सुलझाने, समाजहित और आत्म-विकास के लिए किया जाए, तो उसका उपयोग सार्थक बनता है।

आचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान आत्मा की शुद्धि और आध्यात्मिक विकास का उत्कृष्ट साधन है। इसके अभ्यास से व्यक्ति मानसिक शांति प्राप्त कर सकता है और आत्मा में स्थित रहने की कला सीख सकता है। प्रेक्षाध्यान राग-द्वेष से मुक्त होकर अहिंसा के मार्ग पर अग्रसर होने का अभ्यास कराता है। जीवन को पवित्र और संतुलित बनाए रखने का यह एक प्रभावी उपाय है।

आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का मंचीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर रूस के कुरगन व क्रसनादार के साधकों ने सामूहिक रूप से प्रेक्षाध्यान गीत प्रस्तुत किया। एस्टोनिया की डियाना, यूक्रेन की इयोला, सर्बिया की ओल्गा, श्रीलंका के नरेन कुमार, नेपाल के किशोर सिंह शाही, कुरगन की इलेना और प्रिया बांढिया सहित विभिन्न देशों के साधकों ने अपने अनुभव साझा किए।

प्रेक्षा इंटरनेशनल एवं अहमदाबाद चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष अरविंद संचेती ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर आचार्यश्री ने कहा कि जैन दर्शन आत्मा और शरीर को भिन्न मानता है — आत्मा शाश्वत है और शरीर नश्वर। प्रेक्षाध्यान का यह आध्यात्मिक प्रयोग आचार्य तुलसी के समय से प्रारंभ हुआ था और यह आत्मकल्याण का अत्यंत प्रभावी माध्यम है। इस उपक्रम का संचालन प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमारश्रमणजी द्वारा किया गया।

असत् संस्कारों से मुक्त होकर सत् संस्कारों को अपनाएं : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
13 अक्टूबर, 2025

अध्यात्म जगत के महासूर्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आर्हत वाङ्मय' के माध्यम से पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि यह सृष्टि अनंत जीवों से भरी पड़ी है। चौरासी लाख योनियों में विचरते असंख्य प्राणियों में मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ माना गया है। मनुष्य में ज्ञान, विवेक, श्रुत और शील की जो चेतना है, वह अन्य किसी प्राणी — चाहे देव ही क्यों न हों — में संभव नहीं। मनुष्य अपनी साधना द्वारा पराकाष्ठा तक पहुँच सकता है, यहाँ तक कि सर्वज्ञ भी बन सकता है।

आचार्य प्रवर ने कहा कि मनुष्य में जो सोचने, जानने और कर्म करने की क्षमता है, वही उसकी पहचान है। परंतु यदि वही मनुष्य गलत संस्कारों, दुर्व्यसनों या अधम प्रवृत्तियों में पड़ जाए, तो वह अपने वैशिष्ट्य को खो देता है।

मनुष्य के भीतर अहिंसा और सद्भाव की भावना भी हो सकती है, और हिंसा तथा असद्भाव की प्रवृत्ति भी। यही कारण है कि उपनिषदों में प्रार्थना की गई — 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।' अर्थात् — हे प्रभु! हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, असत् से सत् की ओर, और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।

आचार्यश्री ने कहा कि हिंसा, झूठ, छल, कपट जैसे असत् संस्कारों से मुक्त होकर हमें अहिंसा, सत्य, ईमानदारी और नैतिकता जैसे सत् संस्कारों को अपनाना चाहिए। जैन तत्त्वविद्या के अनुसार संस्कार दो प्रकार के होते हैं — एक, मोहनीय कर्म के औदयिक भाव के संस्कार (जैसे क्रोध, अहंकार, हिंसा आदि) और दूसरे, मोहनीय कर्म के विलय के संस्कार (जैसे अहिंसा, समता, क्षमा आदि)। हमें प्रयास करना चाहिए कि हम गलत संस्कारों से निकलकर श्रेष्ठ संस्कारों की ओर अग्रसर हों।

उन्होंने कहा कि जीवन में अहिंसा, संयम और तप ही धर्म के वास्तविक प्रतीक हैं। किसी भी प्राणी को अकारण पीड़ा न देना, और दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा हम अपने लिए चाहते हैं, यही सच्चा धर्म है। यदि जीवन को हम भवन मानें तो उसमें ज्ञान का प्रकाश और सदाचार की सुगंध भरी रहनी चाहिए। विद्यार्थियों के भीतर भी ज्ञान का आलोक और शील-संस्कारों की सौंधी महक बनी रहनी चाहिए।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा 'ऐलिवेट' कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अणुविभा के चीफ ट्रस्टी तेजकरण सुराणा, सारिका जैन, एनसीसी के कैडेट महक जायसवाल और कृषक पांचाल ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। गुजरात एनसीसी के जोनल हेड केतन बलिराम पाटिल, मेजर जनरल रायसिंह गोदारा और पंजाब के डीजीपी जितेंद्र जैन ने नशामुक्ति और संयम पर अपने विचार साझा किए।

अंत में आचार्यश्री ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि नशे अनेक प्रकार के होते हैं — चाहे पदार्थों का हो या विचारों का।

किसी भी अहितकारी आदत से स्वयं को दूर रखना चाहिए। नशे को मिटाने से पहले 'ऐलिवेट' जैसे सकारात्मक संस्कारों को अपनाना आवश्यक है। आचार्यश्री ने कैडेट्स को नशामुक्त जीवन का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम का संचालन अशोक कोठारी ने किया।

पृष्ठ 16 का शेष

सर्व प्रवृत्ति संयम...

अपने कार्यों में स्वावलम्बी बनने का अभ्यास करना चाहिए। अपना कोई भी कार्य हो, उसे स्वयं करने का प्रयास होना चाहिए। अपने कार्यों में दक्षता का विकास करने का प्रयास हो। विहार, आदि के समय साधु अपना बोझ भी स्वयं वहन करें।

नवदीक्षित साधु-साध्वियां इन कार्यों पर विशेष ध्यान देने का प्रयास करें। साधु संयम संपन्न हो तथा अन्य पापों से भी निवृत्त रहे। इन विषयों पर समणियों को भी ध्यान देने का प्रयास रहना चाहिए। आचार्य प्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी के क्रम को संपादित किया तथा चारित्र आत्माओं को विभिन्न प्रेरणाएं प्रदान की। मुनि मेघ कुमारजी व मुनि आर्ष कुमारजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया।पूज्य गुरुदेव ने दोनों को कल्याणक बख्शीश करवाए। तदुपरान्त उपस्थित साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

सेवा और सहयोग

आचार्य भिक्षु ने साधु-संस्था को संगठित किया और संगठन का आधार भी प्रस्तुत किया। उसका एक मुख्य आधार है– आश्वस्त और विश्वस्त होना। तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने वाला व्यक्ति रुग्णावस्था, बुढ़ापा तथा उस प्रकार की कठिन स्थितियों में असहायता का अनुभव न करे। इस दृष्टि से उन्होंने सेवा और सहयोग की सुदृढ़ व्यवस्था की। उसके कुछ सूत्र ये हैं–

१. जो कोई साध कारणीक हुवै, आंखियादिक गरढो, गिलाण हुवै, जद और साध उणरी अगिलाण पणै वियावच करणी।
२. उणनै संलेखणा री ताकीद देणी नहीं। उण नै वैराग बधे ज्यूं करणो।
३. उणरे विहार करण री रीत–निजर काची हुवै तो उणरै भरोसे निजर राखणी नहीं, उणनै घणी खप करनै चलावणो।
४. रोगियो हुवै तो उण रो बोझ उपाडणो। उणरा घणा परिणाम चढ़ता रहै ज्यूं करणो। पिण उण में साधपणो हुवै तो उणनै छेह देणो नहीं।
५. राजी दावै वैराग सुं संलेखणा करै तो पिण उण री वियावच करणी। कदा एक जणो करतो उछट हुवै तो सगलां नै रीत प्रमाणै करणी। नहीं करे तो नषेध नै करावणी। जो उ न करै तो उणनै बीजा आगा सूं करावणी किण लेखे?

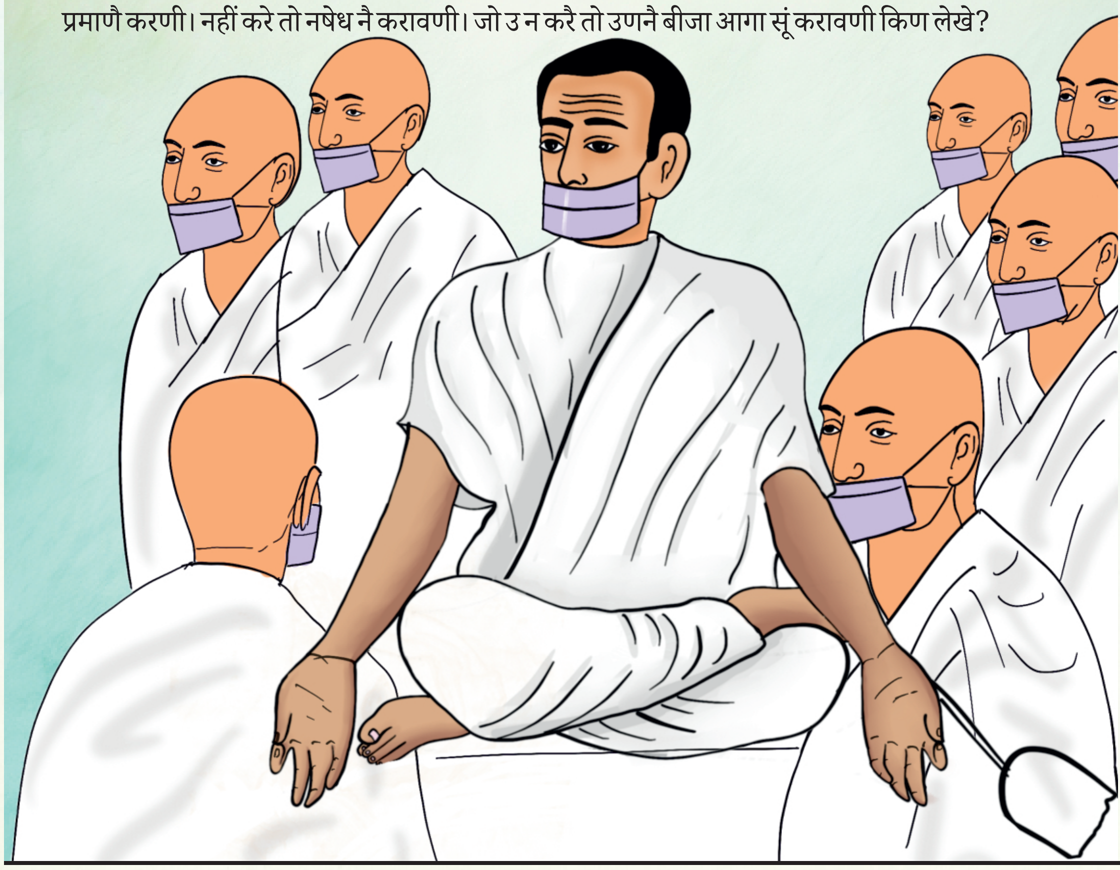

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

बारह व्रत– दिग्व्रत

देखने में यह व्रत छोटा सा प्रतीत होता है, किंतु इसकी उपयोगिता अत्यंत व्यापक है। चाहे वह आत्मिक दृष्टि से हो, आर्थिक दृष्टि से या पर्यावरण की दृष्टि से– आज के इस युग में, जब प्रदूषण का स्तर निरंतर बढ़ रहा है, यह व्रत उसे कम करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है।

यह व्रत केवल इतना भर नहीं है कि कहीं आना-जाना बंद कर दिया जाए। यह हमें सिखाता है कि संयमित रहकर भी जीवन को सुंदर और संतुलित ढंग से जिया जा सकता है। इसके अनेक लाभ हैं– पहला, व्यक्ति अनावश्यक भ्रमण से बचेगा; दूसरा, ईंधन की खपत कम होगी; तीसरा, प्रदूषण में कमी आएगी; चौथा, बाह्य प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रहेगा।

इस व्रत का एक नियम यह भी है कि सीमा निर्धारण के बाद उस सीमा के बाहर की वस्तु न तो मंगवानी है और न ही भेजनी है। यहाँ तक कि सीमा पर खड़े होकर भी अपने अभिप्राय का संकेत नहीं देना चाहिए।

हाँ, इसमें कुछ अपवाद भी माने गए हैं– जैसे न्यायालय संबंधी कार्य, स्वास्थ्य हेतु यात्रा या धर्म-प्रचार के उद्देश्य से बाहर जाना आवश्यक हो, तो उसकी अनुमति है।

अतः यह व्रत प्रत्येक व्यक्ति के लिए ज्ञेय (जानने योग्य), उपादेय (उपयोगी) और आचरणीय (पालन योग्य) है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की ज़ुबानी

फूलझड़ी से क्या होगा?

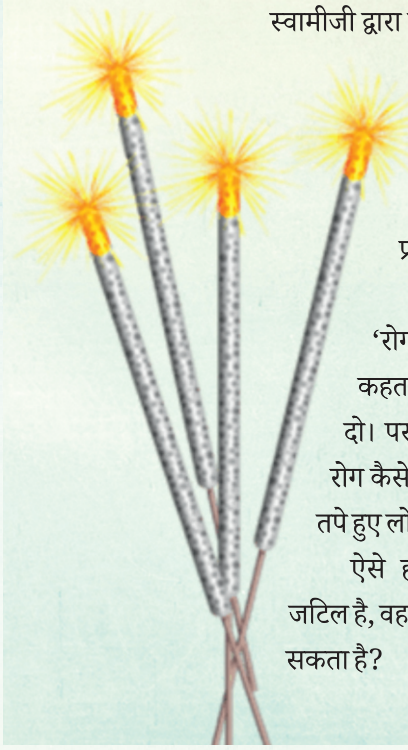

स्वामीजी द्वारा सामने वालों को समझाने के लिए कड़े दृष्टांत का प्रयोग किया जाता। तब किसी ने स्वामीजी से कहा– 'आप कड़े दृष्टांत का प्रयोग करते हो।'

तब स्वामीजी ने कहा– 'रोग तो गंभीर बात का हुआ और कहता है, इसे फूलझड़ी से दाग दो। पर फूलझड़ी से दागने पर वह रोग कैसे मिटेगा? वह मिटेगा आग में तपे हुए लोहे के कुश' के वागने से।

ऐसे ही मिथ्यात्व का रोग बड़ा जटिल है, वह कड़े दृष्टांत के बिना कैसे मिट सकता है?

क्या आप जानते हैं?

कोई महास्कन्ध का त्याग करे तो उसे संपूर्ण जमीकंद का त्याग करना होता है, उसमें सूंठ और हल्दी भी परिवर्जनीय होते हैं। इस स्थिति में कढ़ी, साग आदि में भी हल्दी आदि नहीं पड़नी चाहिए।

साप्ताहिक प्रेरणा

25 बोल के तेरहवें बोल को कंठस्थ कर समझने का प्रयास करें।

सर्व प्रवृत्ति संयम पूर्वक रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
20 अक्टूबर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु संयम पूर्वक चर्या करने वाला होना चाहिए। चलने में, खड़े होने में, बैठने में, सोने में, बोलने में, आदि प्रत्येक कार्य में संयम रखने वाला हो। समिति हो, सम्यक् प्रवृत्ति हो। जिस प्रवृत्ति के साथ संयम जुड़ जाता है, वह प्रवृत्ति समिति बन सकती है। जहां संयम नहीं है, वह प्रवृत्ति हो सकती है अथवा उसे दुष्प्रवृत्ति की कोटि में रखा जा सकता है। उसे समिति अथवा सत्प्रवृत्ति कहना ठीक नहीं लग रहा है। प्रवृत्ति के साथ संयम का भाव जुड़ गया तो सत्प्रवृत्ति और प्रमाद, मोह, आदि जुड़ जाते हैं तो वह दुष्प्रवृत्ति हो जाती है। अतः साधु को संयमपूर्वक चर्या करने वाला होना चाहिए।

नवदीक्षित साधु-साध्वियों, समणियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्य प्रवर ने कहा कि संयम में जागरूकता रखनी चाहिए। रात में अथवा दिन में कभी भी चलना हो तो ईर्या समिति का अपनी ओर से प्रयास रहना चाहिए कि किसी जीव जन्तु की हिंसा न हो जाए। अतः अपनी चर्या में, कार्यों में जागरूकता वृद्धिंगत होती रहनी चाहिए। साधु-जीवन के सभी कार्यों में अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त हो जाए।

(शेष पेज 14 पर)

अर्हम्

मुनिश्री अभय कुमार जी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म : वि. सं. 2000 मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी, सरदारशहर

पिता : श्री सुमेर मल जी बैद

माता : श्रीमती भंवरी देवी बैद

दीक्षा : वि. सं. 2020, भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी, आचार्य श्री तुलसी के करकमलों से लाडनूं में

विशेष : लंबे काल तक मुनि श्री विनय कुमार जी के साथ रहे। हिन्दी, संस्कृत, राजस्थानी, जैन आगम, वेद, उपनिषद, पिटक, व्याकरण, न्याय शास्त्र आदि का अध्ययन। जप एवं मंत्र साधना में विशेष रुचि।

देवलोकगमन : वि. सं. 2082, कार्तिक कृष्णा अष्टमी, 14 अक्टूबर 2025, चंडीगढ़

- इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।
- आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

अर्हम्

'शासनश्री' मुनिश्री मणिलालजी स्वामी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म : वि. सं. 1994, श्रावण शुक्ला द्वितीया, सरदारशहर

माता : श्रीमती सुंदरदेवी दूगड़

पिता : श्री मेघराज जी दूगड़

दीक्षा : वि. सं. 2009, माघ शुक्ला नवमी, आचार्य तुलसी के कर कमलों से सरदारशहर में

अग्रणी : सन् 2010 फाल्गुन शुक्ला दशमी, सिरियारी

साझपति : सन 2012 चैत्र शुक्ला एकम, सिरियारी

'शासनश्री' अलंकरण : आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा

विशेष : वर्तमान में धर्मसंघ के संतों में दीक्षा पर्याय में सबसे बड़े थे। गुरुदेव श्री तुलसी के ज्येष्ठ भ्राता मुनि श्री चंपालाल जी स्वामी की निरंतर सेवा में 23 वर्ष रहे। तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनि श्री सागरमल जी 'श्रमण' के साथ लगभग 59 बरस तक साथ रहे। मुनि श्री जैन आगमों का प्रतिदिन स्वाध्याय करते थे, 32 आगमों का अनेकों बार पारायण किया। प्रतिदिन लगभग 3000 गाथाओं का स्वाध्याय करते।

यात्रा : राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, बंगाल, छत्तीसगढ़, बिहार, यूपी, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि।

देवलोकगमन : कार्तिक कृष्णा एकादशी, 17 अक्टूबर, 2025, सायं लगभग 5.00 बजे, भिक्षु साधना केन्द्र, श्याम नगर जयपुर

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

श्री चरणों में उपस्थित मनसा विधानसभा क्षेत्र से विधायक जयंतीभाई पटेल

ज्योतिचरण के दर्शनार्थ पहुंचे आईसीसी के अध्यक्ष जय शाह

पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ पहुंचे लायंस क्लब इंटरनेशनल के प्रेसिडेंट ए.पी. सिंह एवं पदाधिकारी

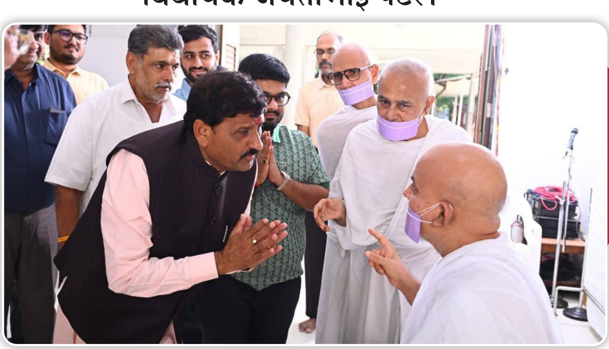

गुजरात सरकार के नवनियुक्त राज्य मंत्री श्री कान्तिभाई अमृतिया श्री चरणों में

श्रीचरणों में गुजरात के शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युम्न भाई वाजा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत